



सरस्वती संगम

राजभाषा पत्रिका वर्ष-2023



उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली





तत्कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष रेलवे बोर्ड श्री अनिल कुमार लाहोटी जी द्वारा दिनांक 28.08.2023 को उत्तर रेलवे की मुख्य राजभाषा अधिकारी डॉ. मोनिका अग्निहोत्री (पूर्व मंडल रेल प्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ) को रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक से सम्मानित किया गया। साथ में उपस्थित अन्य अधिकारीगण।



श्री मोहित सिन्हा, महानिदेशक, मानव संसाधन, रेलवे बोर्ड से रेल मंत्री आदर्श स्टेशन शील्ड प्राप्त करते हुए श्री गौरव दीक्षित, स्टेशन निदेशक वाराणसी। साथ में उपस्थित अन्य अधिकारीगण।



शोभन चौधुरी
महाप्रबन्धक
SHOBHAN CHAUDHURI
General Manager



उत्तर रेलवे,
बज़ीदा हाउस, नई दिल्ली-110001
NORTHERN RAILWAY
BARODA HOUSE, NEW DELHI-110001
☎ : 011-23387227 & 23384548 (Off.)
011-23384503 (Fax)



संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा पत्रिका 'सरस्वती संगम' का वर्ष-2023 का अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

भले ही आज का युग तकनीक का युग है, फिर भी पत्रिकाओं का महत्व आज भी बरकरार है। ये न केवल हमारी लेखन कला को निखारती हैं, बल्कि हमारी भावनाओं एवं विचारों को प्रकट करने का काम भी करती हैं। गृह पत्रिकाओं के माध्यम से रेल कर्मियों के हिंदी लेखन व भाषा ज्ञान के साथ-साथ कार्यालय की गतिविधियों की जानकारी भी मिलती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे रेलकर्मियों की लेखन क्षमताओं को उभारने में सहायक सिद्ध होगी।

दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी के कठिन शब्दों का प्रयोग न किया जाए, हमें सरल, सहज एवं बोलचाल के शब्दों को प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि सरल हिंदी के उपयोग से हम जन-जन तक आसानी से पहुंच सकते हैं।

मैं यही कहना चाहूंगा कि सामूहिक प्रयासों से ही हिंदी का प्रचार-प्रसार संभव है तो आइए, संकल्प लें कि हम सब मिलकर सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक-से-अधिक प्रयोग सुनिश्चित करेंगे, ताकि रेल परिचालन के साथ-साथ हम राजभाषा के क्षेत्र में भी अग्रसर रहें।

मैं, इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त रेल अधिकारियों एवं रेलकर्मियों को बधाई देता हूँ।

(शोभन चौधुरी)



ए.के.सिंघल
अपर महाप्रबंधक
A.K. SINGHAL
Additional General Manager



उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय,
बडौदा हाउस, नई दिल्ली-110001
Northern Railway, Headquarters Office
BARODA HOUSE, NEW DELHI-110001
☎ 011-23389392 (Off.) 011-23381271 (Fax)



संदेश

हर्ष की बात है कि उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सरस्वती संगम" का नया अंक नए कलेवर, नई साज सज्जा के साथ प्रकाशित हो रहा है।

हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के बीच विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। विचारों को कविताओं एवं लेखों के माध्यम से यह पत्रिकाओं में छपा जाता है, यही पत्रिकाओं के प्रकाशन का उद्देश्य है।

जहां तक राजभाषा के प्रयोग-प्रसार का सवाल है तो आज के इस बदलते युग में हम ई-वर्किंग की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय और सभी मंडलों में "ई-ऑफिस" में कार्य शुरू किया जा चुका है। ई-ऑफिस में हिंदी में काम करने की सुविधा भी है। आप अपनी कार्य प्रकृति के अनुसार हिंदी शब्दों का चयन कर सकते हैं। मैं चाहूंगा कि आप अपने दैनिक कामकाज में इसका अधिक से अधिक उपयोग करें। इसके उपयोग से समय एवं स्टेशनरी की बचत होगी और उसके साथ-साथ काम में पारदर्शिता भी बढ़ेगी।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होगी। मैं पत्रिका के नियमित प्रकाशन के लिए इससे जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।


(ए.के.सिंघल)



डॉ. मोनिका अग्निहोत्री
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक
Dr. MONICA AGNIHOTRI
Senior Deputy General Manager



उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली-110001
NORTHERN RAILWAY
Baroda House, New Delhi-110001
Phone : 011-23387349 (off.)
011-23384503 (fax)



संदेश

अत्यन्त हर्ष की बात है कि उत्तर रेलवे का राजभाषा विभाग राजभाषा पत्रिका "सरस्वती संगम" का वर्ष-2023 का अंक प्रकाशित कर रहा है। उत्तर रेलवे परिचालन एवं ग्राहक संतुष्टि जैसे अति महत्वपूर्ण कार्यों के निष्पादन के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी निरंतर आगे बढ़ रहा है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित तकनीकी, स्वास्थ्य संबंधी लेख, कविता, एवं अन्य उपयोगी जानकारी से उत्तर रेलवे के रचनाकारों की साहित्यिक प्रतिभा का पता चलता है। मुझे आशा है कि इस अंक में प्रकाशित रचनाएं पाठक वर्ग को व्यापक जानकारी प्रदान करेंगी।

राष्ट्रभाषा किसी भी राष्ट्र की आत्मा, प्राण, अस्मिता, सार्वभौमिक एकता तथा अखंडता के गौरव का प्रतीक होती है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा भी है। आज औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप से हिंदी देश की संपर्क भाषा बन चुकी है। उत्तर भारत के लगभग सभी राज्यों में हिंदी न सिर्फ बोली जाती है, बल्कि सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का शत-प्रतिशत प्रयोग भी होता है। गर्व की बात है कि आज हिंदी अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर अपनी विशेष पहचान बना चुकी है। अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर हिंदी की पहचान और सुदृढ़ हो, इसके लिए हम सभी का यह दायित्व बनता है कि हम भारत के राष्ट्रीय गौरव को ध्यान में रखकर अपना समस्त कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. मोनिका अग्निहोत्री)



तिरमल सिंह
उप महाप्रबंधक/राजभाषा
TIRMAL SINGH
Dy. GM/Rajbhasha



उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय,
बड़ीदा हाउस, नई दिल्ली-110001
NORTHERN RAILWAY
Baroda House, New Delhi-110001



संपादकीय

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी "सरस्वती संगम" का वर्ष-2023 का अंक आपके कर-कमलों तक पहुंचाने में हर्ष की अनुभूति हो रही है, क्योंकि आपकी प्रतिक्रिया की जिज्ञासा जो रहती है।

वास्तव में गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य होता है कि कार्यालय में कार्यरत रेल कर्मियों की हिंदी लेखन प्रतिभा को निखारना और प्रोत्साहित करना, ताकि रेल कर्मियों का हिंदी के प्रति प्रेम सद्भाव कायम रहे। इस दिशा में राजभाषा संगठन सदैव प्रयासरत है।

आप भली-भांति जानते होंगे कि भाषा किसी राष्ट्र की पहचान होती है और उस राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति और संस्कार उनकी भाषा में प्रतिबिंबित होते हैं। भाषा जिस सांस्कृतिक विरासत में जन्म लेती है, उस विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचाने का कार्य भी करती है। भाषा के माध्यम से हम अपने विचार, कल्पना व चिंतन को एक-दूसरे तक पत्रिकाओं के जरिए पहुंचाते हैं।

उत्तर रेलवे की पत्रिका "सरस्वती संगम" में अधिकारियों/कर्मचारियों के विचार लेख, कहानी, कविताओं के रूप में प्रकाशित किए गए हैं। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हर कर्मचारी का योगदान होता है, जिनकी सहभागिता के कारण हम दैनिक कार्यों के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी अग्रसर हो रहे हैं।

जहां तक राजभाषा हिंदी का सवाल है, तो कहना चाहूंगा कि हिंदी अपनी समृद्धि, भाषा शैली और कौशल के बलवृत्ते पर राष्ट्रभाषा के साथ-साथ संपर्क भाषा और जन भाषा बनी है। आप भली-भांति जानते हैं कि हिंदी में भारतीय संस्कृति, नैतिकता और दर्शन को समझने के लिए सभी गुण विद्यमान हैं, जिसकी वजह से आज हिंदी संपूर्ण विश्व में प्रेम मीडिया, विज्ञापनों, विश्वविद्यालयों में पुष्पित और पल्लवित हो रही है।

"सरस्वती संगम" पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखकों को बधाई देता हूं और अपेक्षा करता हूं कि लेखन के क्षेत्र में सदैव प्रयासरत रहें।

सभी पाठकों का सहयोग एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी, ताकि आगामी अंक नए क्लेवर के साथ परोसा जा सके।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

(तिरमल सिंह)

सरस्वती संगम
उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय राजभाषा पत्रिका – 2023 अंक

	इस अंक में			
	विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.	
संरक्षक शोभन चौधुरी महाप्रबंधक	सब्र का फल मीठा होता है	अंजली शर्मा	1	
	वनस्पति जगत की अद्भुत जानकारीयाँ	कृष्ण प्रसाद ओधवाल	3	
	मेरी पहली विदेश यात्रा स्विट्जरलैंड	वंदना खजुरिया	4	
	मुमकिन है	अनिष कुमार वर्मा	5	
	जिसका मन मस्त -उसके पास समस्त	गुरुजीत सिंह	6	
	हुमेशा ध्यान देने योग्य बातें		7	
	हिंदी दिवस	मोहित कुमार	8	
	अठ बीस की मेट्रो	सुरेंद्र कुमार	10	
	भारतीय रेल : एक बॉलीवुड स्टार	शुभेन्द्र झा	13	
	सेहत एक खजाना	जगमूत काम्बोज	16	
डॉ. मोनिका अग्रिहोत्री मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक	सुन लो मेरे देश वासियों	समशेर सिंह	17	
	हो न होता	अर्चना मीणा	17	
	होता जिसका भाई बड़ा	मुदित कुमार रस्तोगी "ईद्रायण"	18	
	बिरह गीत	राम करन	18	
	अनासक्त	नन्दिनी कपूर	19	
	सरकारी कर्मचारी	पंकज शूद्र 'मासूम'	19	
	ध्रष्टाचार : एक गंभीर बीमारी	आरती भल्ला	20	
	मेरा बचपन	प्रवीण कुमार झा	20	
	शिव स्थान	अमित कुमार माहेश्वरी	21	
	नरम चट्टानें	हरीतिमा "सुभाष"	21	
प्रधान संपादक तिरमल सिंह उप महाप्रबंधक/राजभाषा	संचल दूरभाष यंत्र	दिनेश चन्द	22	
	तीज	नीता खक्सेना	22	
	माँ	मंजू रानी	23	
	सेवानिवृत्ति	सुभाष यादव	23	
	चल मुसाफिर क्या देखता है	आशीष कुमार मिश्रा	24	
	धरा की पुकार	विशाल सिंधु	24	
	सफर में किस्से	गौरव चौदना	25	
	रेलगाड़ी	अशोक कुमार मीणा	26	
	भारत एक अतुल्य - अद्वितीय स्थान	नितिन कुमार	27	
	परमवीर चक्र सूबेदार मेजर योगेन्द्र सिंह यादव	भूप सिंह यादव	27	
संपादक प्रेम सिंह वरिष्ठ अनुवादक	माँ	कृतिका काम्बोज	28	
	भारत माता तुम्हें प्रणाम, अर्पण आपको मंगल गान	विनोद कुमार शर्मा	29	
	राजभाषा नियम, 1976		30	
	फाइलों पर आदेश हिंदी में		34	
	अंग्रेजी-हिंदी पर्याय		35	
	विदेशी भाषाओं के शब्दों का हिंदी लिप्यंतरण		38	
संपादन सहयोगी गुरमीत सिंह वरिष्ठ अनुवादक				
कंचन खाखा पीएस-11				
निःशुल्क वितरण के लिए				

संपर्क सूत्र - राजभाषा विभाग, उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली-110001 (फोन- 32251)। पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। संपादक मंडल इसके लिए किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

मुख पृष्ठ - उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली के प्रशासनिक भवन का चित्र।

अंतिम पृष्ठ- वन्दे भारत ट्रेन एवं विश्व के सबसे ऊंचे चिनाब रेलवे ब्रिज का चित्र।

गरिमा आज सच्ची घटनाओं पर आधारित ड्रामा देख रही थी जिसमें दिखाया गया था कि अकेली, हताश और निराश तथा परिवार से नाराज़ महिलाओं और लड़कियों को किस तरह देह व्यापार में धकेला जाता है। उसे अपने साथ हुई 20 वर्ष पहले की घटना याद आ गई जब वह बस में अपने पति के साथ सफर कर रही थी। बस यात्रियों से खचाखच भरी हुई थी और कंडक्टर जब भी उसके पास से गुजरता तो उससे सट कर गुजरता। पहले तो उसे लगा कि भीड़ के कारण ऐसा हो रहा है। किंतु जल्दी ही उसे समझ आ गया कि वह जानबूझ कर ऐसा कर रहा है क्योंकि वह बिना मतलब बार-बार उसके पास से गुज़र रहा था और हृदय तो तब हो गई जब उसके बिल्कुल पास आ कर सट कर खड़ा हो गया और वहीं खड़ा होकर यात्रियों के साथ बातें करने लगा। गरिमा ने उसे थोड़ा दूर हट कर खड़ा होने के लिए कहा तो वह भड़क गया। गरिमा ने कहा कि अगर मेरी जगह आपके घर की कोई महिला होती तो तब भी आपका यही व्यवहार होता तो वह बदतमीजी से बोला “हमारे घर की औरतें तुम्हारे जैसी नहीं होतीं” सुन कर उसे बहुत गुस्सा आया। एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी। उसने पति की ओर देखा तो पति ने उसे ही चुप रहने के लिए कहा और उलटा उसे ही डांट दिया। पति की ओर से कोई सहारा मिलते न देख उसकी आंखें भर आईं। दुख और अपमान से शरीर जल उठा। उसने अपने पति से कहा कि आप कभी मेरी सपोर्ट नहीं करते। हमेशा मुझे ही गलत ठहराते हो और दूसरों की साइड लेते हो। अगर ऐसा ही करना है तो मुझे भी आपके साथ घर नहीं जाना है, मैं अगले स्टॉप पर ही उतर जाऊंगी। पति ने कहा, “कहां जाओगी”? गरिमा ने कहा, “कहीं भी चली जाऊंगी, पर आपके साथ नहीं जाऊंगी”। इस सारे घटनाक्रम पर बस में बैठी एक औरत नज़र रखे हुई थी। उस महिला ने गरिमा से बात भी करने की कोशिश की। लेकिन गरिमा दुख और अपमान से भरी हुई थी और रो रही थी। उसने उस महिला की किसी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसके मन में सिर्फ यही चल रहा था कि अब वह क्या करे? क्या वह अगले स्टॉप पर बच्चों को लेकर उतर जाए। ऊपर से अंधेरा होने को था। जब अगला स्टॉप आया तो फैसला लेने की घड़ी आ गई। लेकिन वह अपनी सीट से नहीं उठी। पति उसी की ओर देख रहे थे। उसे नहीं पता था कि पति के मन में क्या चल रहा था। बस अगले स्टॉप पर रूकी तो वह नहीं उठी। जो महिला उस पर नज़र रखे थी, वह उसके पास आकर रूकी। उसने गरिमा से कहा, “उतरना नहीं है”? गरिमा ने कहा, “नहीं”। जब उस महिला को गरिमा का बस से नीचे उतरने का कोई इरादा नहीं लगा तो वह बस से उतर गई।

आज इतने वर्षों बाद उसे वह घटना याद आ गई क्योंकि ड्रामे में जो कुछ दिखाया जा रहा था उसके तार उस बस वाली घटना से जुड़ रहे थे। आज उसे यह सोच कर सुख का अनुभव हुआ कि अच्छा हुआ, उस दिन वह अपना गुस्सा और अपमान का घूंट पी गई और बस से नहीं उतरी। अगर उतर जाती तो क्या पता वह और उसके बच्चे भी उस अनजान महिला के हथ्थे चढ़ जाते और यदि उस अजनबी औरत का कोई गिरोह होता तो वह गिरोह उसे और उसके बच्चों को पता नहीं कहाँ बेच देता? क्योंकि उस ड्रामे में यही दिखाया गया था कि किस तरह एक गिरोह ने एक ऐसी औरत और उसके बच्चों को अलग-अलग स्थान पर बेच दिया जो अपने घर से नाराज होकर घर से आ तो गई थी, लेकिन उसके पास जाने के लिए कोई ठिकाना नहीं था और फिर वह और उसके बच्चे एक ह्यूमन ट्राफिकिंग गिरोह के हथ्थे चढ़ गए। उसने फिर एक बार भगवान को धन्यवाद दिया जिसने उस समय उसे सदबुद्धि दी और वह बच्चों के साथ अनजान स्टॉप पर नहीं उतरी और वह आज अपने बच्चों के साथ सकुशल है। हालांकि उस बस वाली घटना के कारण गरिमा ने कई दिनों तक अपने पति से बात नहीं की।

यह तो गरिमा के जीवन की एक घटना है। ऐसी न जाने कितनी घटनाएं हैं जब उसकी देवरानी, जेठानी या ननद से कोई बात हुई तो पति ने उसे कभी सपोर्ट नहीं किया। कई बार तो उसे लगता था कि घर में काम करने वाली बाई की

औकात भी उसके पति की नज़रों में उससे ज्यादा है। एक बार उसने अपने पति से कहा कि यदि मैं कभी आपके लिए अपनी जान भी कुर्बान कर दूँ तब भी आप यही कहोगे कि मेरे मरने का तरीका सही नहीं था। मतलब हर बार पति ने उसकी ही गलती निकालनी थी। क्योंकि गरिमा का पक्ष तो कभी उसके पति ने सुना ही नहीं था। हमेशा उसकी ही गलती निकाली। आखिर गरिमा ने चुप्पी ओढ़ ली।

वह चुपचाप अपने कामों में लगी रहती। उसने जीवन का यही उद्देश्य बना लिया था कि बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान दूँ, बच्चों की पढ़ाई के लिए पैसे जोड़ूँ और अपने हर कर्तव्य को चुपचाप निभाती जाऊँ। उसके पति अपने भाई-बहनों, रिश्तेदारों और दोस्तों के प्रति बहुत अपनापन रखते थे, किंतु घर की ओर उनका कोई ध्यान नहीं था। घर से कितनी-कितनी देर वह गायब रहते। कभी बता कर भी न जाते कि कहां जा रहे हैं। राशन लाना, सब्जी लाना जैसी कोई जिम्मेवारी निभाना उन्होंने नहीं सीखा था। किंतु अपने दफ्तर के प्रति वह बहुत कर्तव्यपरायण थे। ड्यूटी पर समय से जाते, घर देर से आते। हाँ अक्सर बच्चों की फीस जमा करा आते थे। लेकिन कभी न भी कराते तो गरिमा कोई शिकायत न करती। वह खुद फीस जमा करवा आती। घर के प्रति लापरवाही की हद यह थी कि एक बार समय पर बिजली का बिल न भरने पर उनके घर की बिजली कट गई तो गरिमा अपने डैडी के साथ बिजली दफ्तर जाकर बिल जमा करवा आई। बाद में पति बिजली का बिल जमा करवाने बिजली दफ्तर पहुंचे तो उन्हें पता चला कि गरिमा बिजली का बिल जमा करवा आई है। जिस समय की गरिमा बात कर रही है उस समय मोबाइल नहीं होते थे। अतः गरिमा अपने पति को नहीं बता पाई थी कि वह बिजली का बिल जमा करवा आई है। घर आ कर उसके पति ने बहुत गुस्सा किया कि डैडी के साथ बिजली का बिल जमा करवाने क्यों गई? उनका गरिमा से कहना था कि तुम मुझ से ज्यादा प्राथमिकता अपने मायके वालों को देती हो और तुम्हारे माता-पिता हमारे घर में दखलअंदाजी करते हैं जो मुझे पसंद नहीं है। गरिमा की समझ में नहीं आता था कि उसके माता-पिता क्या दखलअंदाजी करते हैं? वह तो बेचारे उसकी सहायता ही करते थे। घर का कोई काम होता था तो पहले वह अपने पति को ही कहती थी, किंतु कई दिन बीत जाने पर भी और बार-बार याद दिलाने पर भी जब उसके पति राजेश वह काम नहीं करते थे तो मजबूरन उसे वह काम या तो खुद करना पड़ता या अपने माता-पिता की सहायता लेनी पड़ती। जिसे वह माता-पिता की दखलअंदाजी कहते थे, वह उनकी सहायता थी। राजेश उसे कभी कार्यालय छोड़ कर नहीं आए थे, उसे याद है कि वह बच्चों को स्कूल भेज कर, घर का काम निपटा कर टाइम देखती। यदि उसे लगता कि पैदल जाने में देर हो जाएगी तो सीधे मम्मी के घर जाती जो उसके कार्यालय के रास्ते में ही पड़ता था। वहां जाकर वह डैडी से कहती और डैडी स्कूटर से उसे कार्यालय छोड़ आते। कई बार तो डैडी बेचारे अपना नाश्ता छोड़ कर उसे कार्यालय छोड़ने जाते। किंतु इन बातों के बीच भी गरिमा सकारात्मकता ढूंढ लेती कि राजेश उसके प्रति या बच्चों के प्रति चाहे लगाव न रखते हों लेकिन अपने भाई-बहनों, दोस्तों के प्रति बहुत लगाव रखते हैं तथा कभी उनका कहना नहीं टालते तो इसका मतलब है कि वह बुरे इंसान नहीं हो सकते। भीतर से वह अच्छे इंसान हैं। यही कह कर अपने मन को समझाती। समय बीतता गया। आखिर उसका सब्र रंग लाया। उसके बच्चे पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़े हो गए। पति राजेश एक धार्मिक संस्था के साथ जुड़ गए जिससे उनके भीतर बहुत बदलाव आया। उन्होंने शराब पीनी छोड़ दी। सिगरेट पीनी छोड़ दी जिसके लिए वह कहा करते थे कि मैं तुम्हें तो छोड़ सकता हूँ किंतु सिगरेट नहीं छोड़ सकता। गुस्सा राजेश की नाक पर रखा रहता था, किंतु अब वह एकदम शांत हो गए थे। गरिमा ने कभी सोचा नहीं था कि राजेश के अंदर इतना बदलाव आएगा। अब गरिमा को लगता था कि उसके पति को समय के साथ उससे और बच्चों से भी लगाव हो गया है या शायद वही गलत सोचती थी कि उसके पति को उससे और बच्चों से लगाव नहीं है। खैर उसने तो भगवान से केवल यही मांगा था कि उसके बच्चे पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़े हो जाएं किंतु भगवान ने तो उसके पति का भी कायाकल्प कर दिया जो शायद शुरू से भीतर से अच्छे इंसान थे, किंतु अपने गुस्से, अहम, शराब और सिगरेट जैसे व्यसनो के कारण घर और बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेवारियां नहीं निभा पाते थे। गरिमा ने टी वी बंद किया और भगवान को फिर से धन्यवाद दिया। उसका मन यह सोच कर संतुष्ट था कि कभी-कभी हम अपमान का छोटा घूंट पी कर सब्र रखते हैं तो बड़ी त्रासदी से बच जाते हैं।

वरिष्ठ अनुवादक, मंडल कार्यालय,
उत्तर रेलवे, फिरोजपुर मंडल

1. 12 वर्षों में एक बार खिलने वाला “नीलकुरिंजी” Botanical name – **Strobilanthes Kunthiana** –

नीलकुरिंजी एक दुर्लभ बैंगनी-नीले रंग का फूल है। मलयालम में नील का अर्थ है नीला और कुरिंजी का अर्थ फूलों से है। जब यह फूल हर बारह साल में खिलता है तो सादी दिखने वाली कालीपारा पहाड़ियों में जान आ जाती है। खास बात ये है कि नीलकुरिंजी के फूल 12 वर्षों में एक बार ही खिलते हैं। इसलिए पर्यटकों को इन फूलों की खूबसूरती को देखने के लिए 12 वर्षों का इंतजार करना पड़ता है। ये फूल दक्षिण भारत के केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य के शोला जंगलों की प्राकृतिक खूबसूरती को और भी ज्यादा बढ़ा देते हैं। ये फूल अगस्त से अक्टूबर के महीने में खिलते हैं। इन फूलों के खिलने का चक्र आखिरी बार 2018 में मुन्नार के कोविलूर, कदावरी, राजमाला और एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यानों में देखा गया था। इसे अगली बार 2030 में देखा जाएगा।

2. हिमालयन वियाग्रा - Botanical name – **Ophiocordyceps sinensis fungus** –

ये संसार का सबसे मंहगा एकमात्र fungus roots plant है जो कि हिमालयन वियाग्रा के नाम से जाना जाता है। इसके 1 किलो roots की विश्व मार्किट में कीमत 10 लाख रूपए है और अधिकतम 20 लाख रूपए है। इसकी अधिक खुदाई के कारण इसे रेड लिस्ट में रखा गया है।

3. द्र जाइंट लिली लीफ- Botanical name – **Victoria amazonica or water Lili** –

सर्वाधिक तौर पर ये अमेज़ोन के जंगलों में पाई जाती है। दुनिया के सबसे सुंदर फूलों में इसका नाम शामिल है। इनकी पत्तियों का आकार सबसे बृहत्त होता है। ये पत्तियां 50 – 80 किलो तक का भार उठाने में समर्थ होती हैं जो कि अपने आप में एक अजूबा है।

4. विशाल टाइटन अरूम फूल- Botanical name – **Amorphophallus Titanum**-

यह संसार का सबसे बड़ा और दुर्लभ प्रजाति का फूल है जो दस साल में एक बार खिलता है वह भी बस कुछ ही दिनों के लिए। यह सुमात्रा – इंडोनेशिया में पाया जाता है। परंतु अब यह संसार के लगभग सभी बोटोनिकल गार्डन में उगाया जा रहा है। इसकी ऊँचाई तीन से दस मीटर के बीच होती है। ज्यादातर फूलों में से खुशबू आती है परंतु अगर इस फूल की बात करें तो इसमें से सड़े हुए मांस की सी बदबू आती है। मगर जब यह खिलता है तो बरबस सबका मन मोह लेता है। अंतिम बार यह Bonn. University में 1987 में खिला था।

5. कीट भक्षी पौधा- **Insect eating pitcher plant** –

मांसाहारी पौधों की लगभग 975 प्रजातियां पाई जाती हैं। जिनमें से लगभग तीस प्रजातियां भारत में ही पाई जाती हैं। इन पौधों ने कीटों को पकड़ने के लिए अनेक तरीके विकसित किए हैं। विस्मय की बात यह है कि कीटों को पकड़ने और पचाने वाले अवयव सौंदर्य से परिपूर्ण होते हैं और इसी सौंदर्य के कारण कीट इन पौधों की ओर आकर्षित होते हैं। कुछ ऐसे मांसाहारी पौधों के नाम – घटपर्णी, सन ड्यू, ब्लैडवर्ट, वीनस फ्लाइट्रेप, सारासीनिया, बटरवर्ट्स तथा कोबरा लिली हैं। संक्षेप में कहें तो मांसाहारी पौधे जीवों की अद्भुत जिजीविषा का परिचय देते हैं।

उद्यान अधिकारी (सेवानिवृत्त)

पू.सी.रेलवे, गुवाहाटी, असम

वर्तमान स्थायी पता-विकास पुरी, नई दिल्ली

मेरी पहली विदेश यात्रा - स्विट्जरलैंड

वंदना खजुरिया

स्विट्जरलैंड मेरी पहली विदेश यात्रा थी और मैंने हर एक क्षण का पूरी तरह से आनंद लिया। यह यात्रा मेरे जीवन के सबसे रोमांचक और मनोहारी अध्याय में से एक थी। जब मैंने पहली बार उसकी हरितिमा और पर्वतीय सुंदरता को देखा, मेरी आंखों में विस्मय और खुशी की चमक थी।



मैंने अपने दिनों का अधिकांश समय जेनेवा में बिताया, जो स्विट्जरलैंड का एक सुंदर शहर है। जेनेवा की चौड़ी सड़कें, सुंदर पार्क और ऐतिहासिक स्मारक मेरे दिल को छू गए। मैंने जेनेवा की खूबसूरत झील का भी आनंद लिया जिसका मनोहारी दृश्य मेरे मन में अमिट छाप छोड़ गया।

सबसे खास था संयुक्त राष्ट्र का दौरा। जब मैंने इस विश्वस्तरीय संगठन की भव्य इमारत को देखा, तो मुझे एक गर्व की अनुभूति हुई। वहाँ का माहौल, विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति, और उनके द्वारा चर्चा किए जाने वाले मुद्दे मेरे लिए अत्यंत आकर्षक थे। मैंने वहाँ विश्व के विभिन्न मुद्दों के बारे में बहुत कुछ सीखा और इसे अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण अनुभव के रूप में मन में सुंदरता के साथ रखा।

उसके बाद मैं चामोनिक्स गई, जो एक अनोखा और मनोहारी पर्वतीय स्थल है। वहाँ की बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ और विशाल हिमालयी दृश्य मेरे हृदय को छूने में सक्षम थे। मैंने उस अद्वितीय सौंदर्य का सम्पूर्ण रूप से आनंद लिया, जिसे मैंने अपने सपनों में देखा था।

स्विट्जरलैंड मेरी जिंदगी की एक अविस्मरणीय यात्रा थी और मैं हमेशा उसकी यादों को अपने दिल में सुरक्षित रखूंगी। विदेशी संस्कृति, लोगों की मैत्रीपूर्णता और उनकी अतिथि सत्कार भावना ने मेरी जिंदगी को एक नई दिशा दी। मैं उत्साहित होकर दुनिया भर की और यात्राएं करने की उम्मीद करती हूँ।

लेखा सहायक, लेखा विभाग
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

- “जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया।”

- “कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है।”

“आचार्य विनोवा भावे”

मुमकिन है

अनिष कुमार वर्मा

मुमकिन है कि तुम हार जाओगे, टूट तुम सैकड़ों बार जाओगे एक बार फिर से सोच लो, कब तक सहार-ए-पतवार जाओगे, उठ कर पुनः तू युद्ध कर, अपना वजूद सिद्ध कर, एक हठ जो अब है ठान लिया, एक लक्ष्य तूने मान लिया, जीत तुम जरूर अबकी बार पाओगे।। मुमकिन.....

बुलाएंगी हरदम रुकावटें तुझे, शहर की हज़ार जगमगाहटें तुझे, मशाल को तू थामना, अँधेरे को कुछ मत मानना, लक्ष्य जब इतना बड़ा, सामने विशाल - सा खड़ा, हिम्मत तुम कैसे फिर हार जाओगे।

संभव है तुझे कुछ भी न मिले, ये सफर तुझे अब व्यर्थ लगे, तू हौसला ना हारना, एक बार फिर से ललकारना, पीड़ा बहुत ही खास है, पाने की जब कुछ आस है, तुम हो पथिक ये याद रखो, साहस अपने साथ रखो, ये अभी शुरुआत है, रास्ते तुम ऐसे आगे हज़ार पाओगे।।

कमियों को तू स्वीकार कर, कोशिश हज़ार बार कर, तू ना होगा पार दरिया, सिर्फ एक ही प्रयास में, यूँ बैठने से क्या मिला, बैठा है क्यूँ बस आस में, खुद पर तू अब विश्वास कर, एक बार तो प्रयास कर, दरिया का वजूद ही क्या, सागर को तुम कर पार जाओगे।

बन पार्थ तू, अब युद्ध कर ! दुश्मन को अपने क्षुब्ध कर, दिखा अब पराक्रम, काल को भी मंत्रमुग्ध कर, कुछ कर अलग, विशेष कर, सांस आखिरी जब तक शेष कर, वक्रत कर बर्बाद यूँ ही, आखिर फलक पर कैसे छाओगे।

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी ,लेखा
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

-“यदि भारत को राष्ट्र बनाना है, तो चाहे मानें या न मानें, राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है।”

- “कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।”

- “व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है वह जो सोचता है वही बन जाता है”

“मोहन दास करम चंद गांधी”

-“मित्रता की सच्ची परीक्षा संकट में नहीं उत्कर्ष में होती है जो मित्र के उत्कर्ष को बर्दाश्त कर सके वही सच्चा मित्र होता है।”

“हरिशंकर परसाई”

एक भिखारी किसी किसान के घर भीख माँगने गया। किसान की स्त्री घर में थी, उसने बेसन की रोटी बना रखी थी। किसान जब घर आया, उसने अपने बच्चों का मुख चूमा, स्त्री ने उनके हाथ पैर धुलाये, उसके बाद वह रोटी खाने बैठ गया। स्त्री ने एक मुट्ठी चना भिखारी को डाल दिया, भिखारी चना लेकर चल दिया।

रास्ते में भिखारी सोचने लगा, “हमारा भी कोई जीवन है? दिन भर कुत्ते की तरह माँगते फिरते हैं। फिर स्वयं बनाना पड़ता है। इस किसान को देखो कैसा सुन्दर घर है। घर में स्त्री है, बच्चे हैं, अपने आप अन्न पैदा करता है। बच्चों के साथ प्रेम से भोजन करता है। वास्तव में सुखी तो यह किसान है।

इधर वह किसान रोटी खाते-खाते अपनी स्त्री से कहने लगा, “नीला बैल बहुत बुढ़ा हो गया है, अब वह किसी तरह काम नहीं देता, यदि कहीं से कुछ रुपयों का इन्तजाम हो जाये तो इस साल का काम चले। साधोराम महाजन के पास जाऊँगा, वह ब्याज पर दे देगा।”

भोजन करके वह साधोराम महाजन के पास गया। बहुत देर चिरौरी विनती करने पर 1रु. सैकड़ा सूद पर साधो ने रुपए देना स्वीकार किया। एक लोहे की तिजोरी में से साधोराम ने एक थैली निकाली और गिनकर रुपये किसान को दे दिये।

रुपये लेकर किसान अपने घर को चला, वह रास्ते में सोचने लगा- “हम भी कोई आदमी हैं, घर में 5 रु. भी नकद नहीं। कितनी चिरौरी विनती करने पर उसने रुपये दिए हैं। साधो कितना धनी है, उसके पास सैकड़ों रुपये हैं।” वास्तव में सुखी तो यह साधोराम ही है। साधोराम छोटी सी दुकान करता था, वह एक बड़ी दुकान से कपड़े ले आता था और उसे बेचता था।

दूसरे दिन साधोराम कपड़े लेने गया, वहाँ सेठ पृथ्वीचन्द की दुकान से कपड़ा लिया। वह वहाँ बैठा ही था कि इतनी देर में कई तार आए कोई बम्बई का था तो कोई कलकत्ते का, किसी में लिखा था 5 लाख मुनाफा हुआ, किसी में एक लाख का। साधो महाजन यह सब देखता रहा, कपड़ा लेकर वह चला आया। रास्ते में सोचने लगा, “हम भी कोई आदमी हैं, सौ दो सौ जुड़ गये महाजन कहलाने लगे। पृथ्वीचन्द कैसे हैं, एक दिन में लाखों का फायदा। “वास्तव में सुखी तो यह है, उधर पृथ्वीचन्द बैठा ही था, कि इतने ही में तार आया कि 5 लाख का घाटा हुआ। वह बड़ी चिन्ता में था कि नौकर ने कहा, आज लाट साहब की रायबहादुर सेठ के यहाँ दावत है। आपको जाना है, मोटर तैयार है।”

पृथ्वीचन्द मोटर पर चढ़ कर रायबहादुर की कोठी पर चला गया। वहाँ सोने चाँदी की कुर्सियाँ पड़ी थी, रायबहादुर जी से कलक्टर-कमिश्नर हाथ मिला रहे थे। बड़े-बड़े सेठ खड़े थे। वहाँ पृथ्वीचन्द सेठ को कौन पूछता, वो भी एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया। लाट साहब आये, राय बहादुर से हाथ मिलाया, उनके साथ चाय पी और चले गये।

पृथ्वीचन्द अपनी मोटर में लौट रहे थे, रास्ते में सोचते आ रहे थे, हम भी कोई सेठ हैं, 5 लाख के घाटे से ही घबड़ा गये। राय बहादुर का कैसा ठाठ है, लाट साहब उनसे हाथ मिलाते हैं। “वास्तव में सुखी तो ये ही है।”

अब इधर लाट साहब के चले जाने पर रायबहादुर के सिर में दर्द हो गया, बड़े-बड़े डॉक्टर आए। वे अकेले एक कमरे में पड़े थे। कई तार घाटे के एक साथ आ गये थे। उनकी भी चिन्ता थी, कारोबार की भी बात याद आ गई। वे चिन्ता में पड़े थे, तभी खिड़की से उन्होंने झाँक कर नीचे देखा, एक भिखारी हाथ में एक डंडा लिये अपनी मस्ती में जा रहा था। राय

बहदुर ने उसे देखा और बोले, “वास्तव में तो सुखी यही है, इसे न तो घाटे की चिन्ता न मुनाफे की फिक्र, इसे लाट साहब को पार्टी भी नहीं देनी पड़ती, सुखी तो यही है।”

शिक्षा:-

इस प्रसंग से हमें यह पता चलता है कि हम एक-दूसरे को सुखी समझते हैं, पर वास्तव में सुखी कौन है, इसे तो वही जानता है जिसे आन्तरिक शान्ति है, जिसे आन्तरिक सुकून है। आप चाहे भिखारी हों चाहे करोड़पति हों। लेकिन आप के मन में जब तक शांति नहीं है तब तक आपको सुकून नहीं मिल सकता।

सदैव प्रसन्न रहिये - जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है।

जिसका मन मस्त है - उसके पास समस्त है।।

टेक्नीशियन-१। (मेकेनिकल)

ट्रेन सेट डिपो, शकूरबस्ती

हमेशा ध्यान देने योग्य बातें

- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले प्रलेख जैसे-सामान्य आदेश(परिपत्र/,कार्यालय आदेश आदि), अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां/ रिलीज, संविदाएं, करार, लाइसेंस,परमिट, निविदा सूचनाएं और इनके प्रारूप, संकल्प, नियम, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी कागज पत्र, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें, प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें(संसद के किसी सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों के अलावा) हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी में जारी करें।
- अधिकारी अपने निरीक्षण के दौरान हिंदी संबंधी निरीक्षण करें, और उसका उल्लेख अपनी निरीक्षण रिपोर्ट में भी करें और अपनी निरीक्षण रपट हिंदी में तैयार करें ।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दें और फाइलों पर टिप्पणियां हिंदी में लिखें ।
- कंप्यूटरों पर अपना कार्य हिंदी में करें ।
- अधिकारी डिक्टेशन हिंदी में दें ।
- सेवा पंजिकाओं और रजिस्ट्रों में प्रविष्टियां हिंदी में करें ।
- विभागीय बैठकों की कार्यसूची एवं कार्यवृत्त हिंदी में जारी करें।
- दौरा कार्यक्रम, यात्रा भत्ता बिल, छुट्टियों तथा पास के आवेदन पत्र हिंदी में भरें ।
- स्वस्थता/अस्वस्थता प्रमाण पत्र/ चिकित्सा प्रमाण पत्र हिंदी में जारी करें ।
- **क** और **ख** क्षेत्रों के लिए पास/पी.टी.ओ. हिंदी में जारी करें।
- **क** और **ख** क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिंदी में लिखें ।
- अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दें ।
- नाम पट्ट, पदनाम पट्ट, सूचना पट्ट, रबड़ की मोहरें हिंदी- अंग्रेजी द्विभाषी में ही बनवाएं।
- सभी फाइलों पर विषय और शीर्ष हमेशा हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी में लिखें।

भारत विविधता में एकता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जहाँ विविधता के अनेक प्रकार हैं; जैसे- भाषा में विविधता, सभ्यता-संस्कृति में विविधता, वेश-भूषा में विविधता, रहन-सहन में विविधता, भौगोलिक विविधता, मौसमिक विविधता इत्यादि विशिष्टता के मुख्य कारण हैं। विविधता के संबंध में एडम ने लिखा है- 'यदि आपके पास पर्याप्त धन और समय है तो आप संसार का भ्रमण कर सकते हैं और यदि आपके पास पर्याप्त धन और समय नहीं है, तो आप भारत का भ्रमण कर सकते हैं' क्योंकि आपको हर प्रकार की विविधता एक ही भूखंड पर (भारतीय उपमहाद्वीप) देखने को मिल जाएगी।' एक तरफ तो हम विविधता का दंभ भरते हैं वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को तरजीह न देना न्यायसंगत नहीं है।

14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाया गया और भारतीय संविधान के भाग-17 के अन्तर्गत अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351 तक राजभाषा को लेकर संवैधानिक प्रावधान किये गये हैं। राजभाषा हिंदी भाषा, भारतीयों को एक धागे में पिरोने की एक संपर्क भाषा है, जो एकता की सुगन्ध से सरावोर है। यही कारण है कि महात्मा गाँधी जी, सुभाष चंद्र बोस आदि महापुरुषों ने हिन्दी भाषा को तत्कालीन समय में भी तरजीह दी जबकि उस समय औपनिवेशिक शक्तियाँ भारतीयों पर अपनी भाषा, सभ्यता-संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान इत्यादि थोपने पर आमादा थीं।

आठवीं सदी के पूर्वाद्ध में तुर्की, अरबी आक्रांता जब भारत में आए तो वह अपनी भाषा-लिपि, सभ्यता-संस्कृति और कुंठित महत्वाकांक्षा को लेकर भारत में आए और उन्होंने अपनी भाषा अरबी-फारसी भाषा को ज्यादा तवज्जो दी और फिर पंद्रहवीं सदी के उत्तार्द्ध में यूरोपियों का भारत में आगमन हुआ जिनकी प्रारंभिक उत्कंठा तो व्यापारिक लाभ कमाना थी, लेकिन समय दर समय उनकी कुंठाग्रस्त महत्वाकांक्षाओं का विस्तार होता गया और उन्होंने भारत में अपने स्वार्थपूर्ण आर्थिक लाभ की पूर्ति के लिए, अपने विस्तार को उन्होंने बल दिया और बहु-आयामी क्षेत्रों में उनकी कुंठित महत्वाकांक्षाएं पैर पसार गई और उन्होंने भारतीय सभ्यता-संस्कृति, भाषा, लिपि, भारतीय पारंपरिक ज्ञान को पारलौकिक करार देकर भारत को साँप-सपेरो व जादूगरों का देश करार दिया और यह दिखाने का स्वांग रचा कि उपनिवेश भारत पर औपनिवेशिक शक्तियों का आगमन व शासन, भारतीयों को आधुनिक ज्ञान देना, भारतीयों के आधुनिकीकरण का, भारत के उद्धार एवं सर्वांगीण विकास के लिए सर्वोपयुक्त है।

इसी को मद्देनज़र रखते हुए लॉर्ड बिलियम बैंटिक के शासन काल में गर्वनर जनरल की काउंसिल का सलाहकार सदस्य बनकर मैकाले को भारतीय धरती पर पूर्व निर्धारित महत्वाकांक्षाओं के तहत भेजा गया जिसने मैकाले मिनट्स जारी किए जिससे प्रभावित होकर बिलियम ने मैकाले को शिक्षा समिति का सभापति बना दिया और मैकाले ने अधोगामी निस्पन्दन सिद्धान्त (Downward Filtration Theory) दी जिसके तहत उसकी कुंठित महत्वाकांक्षा थी कि उच्च एवं मध्यम वर्ग को अंग्रेज़ी भाषा में शिक्षा दी जाए ताकि अंग्रेज़ी भाषा का प्रचार-प्रसार रिस-रिस कर निम्न वर्ग तक हो जाए और जिससे एक ऐसा वर्ग तैयार होगा जो रंग और खून से तो भारतीय होगा लेकिन विचारों, भाषा, सभ्यता-संस्कृति से अंग्रेज व अंग्रेजीयत से परिपूर्ण होगा। इस प्रकार तैयार वर्ग समझने लगेगा कि अंग्रेज़, अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजीयत ही भारतीयों के लिए हितैषी एवं उद्धारक हैं। इसलिए अंग्रेज़ों ने भारत में आकर हिंदू-मुस्लिम एवं अन्य पंथों के ग्रंथों का अपनी अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद करवाया ताकि उपनिवेश राज्य/देश की रीति-नीति, भाषा, सभ्यता-संस्कृति को समझ सकें और निहित स्वार्थों को अमलीजामा पहना सकें। उन्नीसवीं सदी में मैकाले के भावों-विचारों का वायरस संक्रामक रोग की भांति फैला और निरन्तर फैलता ही जा रहा है। हद तब हो जाती है जब लोग हिन्दी जानने वालों, समझने वालों, बोलने वालों और हिन्दी के पक्षधरों को, मैकाले

की पराधीन प्रणाली या अंग्रेज़ीयत के शिकार एवं पूर्वाग्रह से ग्रस्त लोग उन्हें दीन-हीन एवं तुच्छ समझने लगते हैं कि हाय, आपको अंग्रेज़ी नहीं आती। मेरे कहने एवं समझाने का तात्पर्य यह नहीं कि अंग्रेज़ी से नफ़रत करें या हेय दृष्टि से देखें, ऐसा बिल्कुल नहीं है। हमें अपनी मातृत्व व देशीय भाषाओं के साथ विदेशी भाषाओं के सह-अस्तित्व को स्वीकार करने के साथ राजभाषा हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को तरजीह देना हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना एवं क्षेत्रीय भाषाओं को मान-सम्मान देना ज्यादा न्यायसंगत होगा।

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है जिसका स्वभाव रहता है कि कुछ नया सीखने एवं करने का। हमें बहुभाषाविद् होना चाहिए, हमें आधुनिकीकरण की ओर बढ़ना चाहिए, नई-नई खोजों एवं विचारों का उदघोष करना चाहिए लेकिन राष्ट्रीय एकता के एक सूत्र में बँधे रहते हुए। यह भी सच है कि अंग्रेज़ी वैश्विक संपर्क की एक भाषा है, लेकिन इसे ही उन्नति की, एकमात्र भाषा समझ लेना, अपनी मातृत्व भाषाओं, राजभाषा हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को गौण समझने जैसा होगा। ऐसे बहुत-से उदाहरण हैं जिन देशों में देशीय भाषाओं को तरजीह एवं अंग्रेज़ी को ऐच्छिक एवं संपर्क भाषा मात्र समझा जाता है और उन्होंने अपनी देशीय भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया और आज वह देश आर्थिक ताक़त के तौर पर जाने-माने जाते हैं; जैसे- चीन की मंदारिन, जापान की जापानी एवं रूस की रूसी।

हिन्दी की स्वीकार्यता

आज हिन्दी को जहाँ संस्कृत की बेटी कहा जाता है, हिन्दी को भारत की राजभाषा का दर्जा लिए हुए है और वहीं हिन्दी आज विश्व के अनेक देशों में बोली व समझी जाती है, यानी कि हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो रहा है, जिसके तहत अमेरिका, यूरोप एवं अफ्रीका में हिन्दी भाषा का प्रसार हो रहा है। हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है जिसे लगभग देश की आधी जनसंख्या बोल-समझ सकती है। फिर भी हिन्दी उपेक्षा का शिकार हो रही है, जिसके कारण राष्ट्रीयता का हास एवं आधुनिकता कम, आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य का अंधानुकरण-सा हो रहा है। अब तो तकनीक के क्षेत्र में भी राजभाषा हिन्दी ने अपने पैर पसार लिये हैं, जैसे- कू, ट्विटर, फेसबुक आदि पर हिन्दी में अपनी बात या संदेश प्रकाशित किए व पढ़े जा सकते हैं। इसी को ध्यान में रखकर अब सुप्रीम कोर्ट एवं उच्च न्यायालय भी हिन्दी को बढ़ावा देने की बात को बल देने लगे हैं और सोने पे सुहागा तब हुआ जब 34 वर्ष बाद आयी नई शिक्षा नीति ने भी हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को तरजीह देने का काम किया जो एक सराहनीय कदम है। जहाँ एक तरफ़ हम औपनिवेशिक निशानियों का त्याग कर रहे हैं और उनको त्यागने की ओर कदम बढ़ा रहे हैं तो हमें राजभाषा हिन्दी एवं हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के विषय में गहन चिन्तन-मनन की आवश्यकता है।

अतः अब यह कहने में कोई हर्ज नहीं होगा कि अब राजभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर विचार, क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा और बाहरी भाषाओं को ऐच्छिक करने की ओर कदम बढ़ाना अपनी मातृत्व भाषाओं, क्षेत्रीय भाषाओं व हमारी राजभाषा हिन्दी के साथ न्याय की बात होगी। सुभाष चंद्रबोस जी ने कुछ इस प्रकार लिखा है-
'वह दिन दूर नहीं जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' होगी'। इक़बाल साहब ने क्या ख़ूब लिखा है-

‘हिन्दी हैं हम,

वतन है हिन्दोस्तां हमारा,

सारे जहां से अच्छा,

हिन्दुस्तान हमारा।’

‘14 सितंबर हिन्दी दिवस’ को समर्पित कुछ पंक्तियाँ—

हिन्दी प्राचीनता की पहचान है,

हिन्दी सबों की जान है।

हिन्दी बंधुत्व का भाव है,

हिन्दी एकत्व का स्वभाव है।

हिन्दी देश की धरोहर है।

हिन्दी ज्ञान का सागर है।

हिन्दी आशुलिपिक, कार्मिक विभाग,
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

प्राचीन काल से ही मनुष्य को आवागमन के साधनों की आवश्यकता रही है। पहले वह पैदल ही इधर-उधर आता-जाता था। थोड़े समय के बाद पशु जैसे घोड़ा, हाथी, ऊंट आदि का प्रयोग आवागमन व सामान ढोने के लिए करना शुरू कर दिया। इसी क्रम में ऊंटगाड़ी, घोड़ागाड़ी, बैलगाड़ी आदि चलन में आए। समय के साथ-साथ मनुष्य की आवश्यकताएं बदली तथा उसे अधिक सुगम, सुविधाजनक और कम समय में गंतव्य तक पहुंचाने वाले यातायात के साधनों की आवश्यकता हुई। बस, रेलगाड़ी, ट्रक, हवाई जहाज आदि आधुनिक समय के आवागमन के साधन हैं। इसी क्रम में वर्तमान समय में बड़े शहरों, महानगरों में यातायात का नवीनतम साधन मेट्रो है। वैसे तो मेट्रो शब्द का अर्थ बड़ा शहर या महानगर होता है। किंतु समय के साथ-साथ यह शब्द बड़े शहरों तथा महानगरों में चलने वाली सुविधाजनक आरामदायक रेलगाड़ी का पर्याय बन गया। महानगरों तथा बड़े शहरों में यातायात जाम की समस्या रहती है। यातायात जाम की समस्या वाले शहरों में मेट्रो वरदान साबित हुई है। मेट्रो से कम समय में और आराम से यात्रा की जा सकती है। इसीलिए लोग सहर्ष मेट्रो का उपयोग करते हैं। मेरे महानगर में जब मेट्रो सेवा शुरू हुई तो हम सुबह-शाम यातायात जाम से जुझने वालों को एक आशा की किरण दिखाई दी, लगा कि अब हमारी समस्या का समाधान हो जाएगा! हुआ भी ऐसा ही। सुबह-शाम घंटों यातायात जाम में फंसी बसों में बैठे धूल, धुएँ, सर्दी और गर्मी से परेशान रहने वाले हमने जब जाना कि मेट्रो वातानुकूलित है, अर्थात् धूल, धुएँ सर्दी और गर्मी का कोई असर ही नहीं होगा, बारहों महीने आराम ही आराम तो हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मेट्रो शुरू हुई समय की बचत होने लगी तथा प्रदूषण में भी कमी आई। मैंने भी रोजाना आने-जाने के लिए मेट्रो का उपयोग करना सुनिश्चित किया। कार्यस्थल के समय के अनुसार मैं एक बड़े मेट्रो स्टेशन से प्रातः 8 बजकर 20 मिनट पर चलने वाली मेट्रो से यात्रा करने लगा। मैं मेट्रो स्टेशन के प्रवेश द्वार पर सुरक्षा जांच की कतार में खड़ा हूँ। मुझसे आगे चार-पांच लोग हैं। जब तक दो लोगों की सुरक्षा जांच हुई तब तक मेरे पीछे लगभग दस लोग और कतार में लग गए। सबको स्टेशन के अंदर जाने की जल्दी है। मैं इंतजार में हूँ कि मुझसे आगे वाले सज्जन की बारी आए तो मैं अपना बैग सुरक्षा जांच मशीन में डालूँ। तभी पीछे से दो लोग आए और अपने बैग सुरक्षा जांच मशीन में डालकर कतार में खड़े हो गए। सुरक्षा जांच कर्मि बार-बार यह कहते हैं कि अपनी बारी आने पर ही बैग, थैला, पर्स आदि सुरक्षा जांच मशीन में डालें। लेकिन लोग हैं कि मानने को तैयार ही नहीं हैं, पीछे से आकर पहले अपना बैग, थैला आदि डालकर चले जाते हैं। मेरी बारी आने पर मैंने सुरक्षा जांच मशीन में अपना बैग डाल दिया। स्वयं की सुरक्षा जांच करवाई और जांच मशीन की दूसरी ओर से अपना बैग उठाना चाहा। लेकिन यह क्या! बैग तो अभी मशीन से बाहर ही नहीं आया। जिन लोगों ने पीछे से आकर मुझसे पहले बैग डाले थे, वे बैग बाहर आकर इकट्ठे हो गए हैं और मशीन रुक गई है। रुकने के कारण मेरा बैग मशीन के अंदर ही रह गया। सुरक्षा जांच कर्मि ने मशीन को थोड़ा आगे-पीछे किया और मैंने उन दो सज्जनों के बैग उठाकर थोड़ा आगे रखे। तब कहीं जाकर मेरा बैग मशीन से बाहर आया। मैं अपना बैग लेकर प्लेटफॉर्म की ओर चल पड़ता हूँ। मेट्रो आई और मैं अन्य लोगों के साथ उसमें सवार हो गया। मैं डिब्बे में सीट पर बैठा हूँ। क्योंकि अधिकतर मेट्रो इसी स्टेशन से बनकर चलती हैं तो बैठने के लिए सीट मिल जाती है। मेट्रो ने अपने निर्धारित समय पर प्रस्थान किया। डिब्बा अभी खाली है, दस-बारह लोग ही डिब्बे में बैठे हैं। मेरे सामने की सीट पर दाहिने किनारे पर बैठे सज्जन ने अपना रुमाल हाथ में लिया हुआ है। ये सज्जन बार-बार दांतों से अपना रुमाल चबा रहे हैं। रुमाल क्यों चबा रहे हैं! यह मेरी समझ से परे है। कुछ पल बाद इन सज्जन ने अपने बैग से पानी की बोतल निकाली, एक घूंट पानी पिया और बोतल रख दी। क्या प्यास लगने पर केवल एक घूंट पानी पर्याप्त होता है! इस प्रश्न ने मुझे उलझा दिया। एक सज्जन महिलाओं के लिए आरक्षित सीट पर पर बैठे हैं। जबकि अभी कई सीट खाली हैं। शायद ये घर से

तय करके चले थे कि आज एक गैरकानूनी काम जरूर करना है, उसी इच्छा को पूरा करने के लिए महिला सीट पर विराजमान हैं। यह तय है कि कुछ देर बाद इन्हें यह सीट छोड़नी पड़ेगी। तो क्या हुआ! महिला सीट पर यात्रा करने का आनंद ही कुछ और है! भले ही कुछ देर बाद सीट छोड़नी पड़े। अगले स्टेशन से कुछ और यात्री सवार हुए। इनमें बाइस-तेइस वर्ष की एक युवती भी शामिल है। सीट खाली होने के बाद भी युवती सीट पर नहीं बैठी और दूसरी ओर के दरवाजे के पास जाकर खड़ी हो गई। वह मोबाइल फोन से किसी को संदेश (मैसेज) भेज रही है। अगले स्टेशन से एक युवक डिब्बे में सवार हुआ और युवती के पास जाकर खड़ा हो गया। युवक की आयु चौबीस-पच्चीस वर्ष है। युवक के हाथ में एक थैली है। दोनों में बातचीत शुरू हो गई। युवक ने थैली में से सैंडविच निकाला और युवती को खाने के लिए दे दिया। युवती सैंडविच खाने लगी। जब युवती ने सैंडविच खा लिया तो युवक ने थैली में से एक अन्य थैली में पैक जूस निकाला और डिस्पोजेबल गिलास में डालकर युवती को दिया। युवती धीरे-धीरे जूस पीने लगी। जूस खत्म हुआ, युवती ने अपने हाथ साफ किए। अंदेशा यह था कि हाथ साफ करने के बाद बचे हुए कागज और पॉलिथीन की थैली मेट्रो के डिब्बे में न गिरा दें! किंतु ऐसा नहीं हुआ और एक थैली में खाली डिस्पोजेबल गिलास, कागज आदि इकट्ठे करके युवक ने अपने पास रख लिये। युवक-युवती की आपस में बातचीत जारी है। बातें करते-करते युवक को न जाने क्या सूझी और वह अपने हाथ के नाखूनों से युवती के हाथ के नाखूनों को साफ करने लगा। ऐसा किस उद्देश्य से कर रहा था यह समझ नहीं आया। युवक के ऐसा करने से युवती के नाखून कितने साफ हुए यह तो नहीं बताया सकता, लेकिन कुछ गंदगी डिब्बे के फर्श पर जरूर गिरी और “स्वच्छ मेट्रो” अभियान को निश्चित रूप से धक्का लगा। रुमाल चबाने वाले सज्जन ने बोतल से फिर एक घूंट पानी पिया।

दो स्टेशन बाद सत्रह-अठारह वर्ष के कुछ लड़कों का झुंड डिब्बे में सवार हुआ। सभी एक ओर खड़े हो गए और आपस में बातें करने लगे। बातचीत का विषय पढ़ाई-लिखाई है। देश के कुछ नवयुवकों को आपस में पढ़ाई-लिखाई की बातें करते देख मुझे बहुत खुशी हुई। कुछ तो ऐसे हैं जो अपना ध्यान अपने कार्य अर्थात् अपनी पढ़ाई-लिखाई पर केंद्रित रखते हैं, इधर-उधर नहीं। रुमाल चबाने वाले सज्जन ने बोतल से फिर एक घूंट पानी पिया। अब डिब्बे की सभी सीटें भर चुकी हैं और कुछ लोग खड़े हैं। तीन लोग डिब्बे के फर्श पर बैठे हुए हैं। एक सज्जन ने अभी-अभी डिब्बे में प्रवेश किया है। उन्होंने अपने बैग से एक गोल डिब्बे जैसी वस्तु निकाली। समझ नहीं आया कि क्या है! इधर-उधर देखा, शायद खाली सीट देख रहे हैं! क्योंकि खड़े होने के लिए तो पर्याप्त स्थान है। दो कदम कोने की ओर गए, उस गोल वस्तु को खींचा तो वह एक छोटे स्टूल में बदल गई। उस सज्जन ने उसे फर्श पर रखा और उसपर बैठ गए। लोग आश्चर्यचकित होकर उस व्यक्ति की ओर देखने लगे। एक के मुंह से तो निकल ही पड़ा ‘वाह! बैठने का क्या तरीका निकाला है?’

फोल्डिंग स्टूल पर बैठने के बाद उस सज्जन ने अपना मोबाइल फोन निकाला और विडिओ कॉल करके किसी से बात करने लगा। रुमाल चबाने वाले सज्जन ने चौथी बार बोतल से एक घूंट पानी पिया।

पढ़ाई-लिखाई की बातें करने वाले लड़कों का झुंड मेट्रो से उतर गया है। रुमाल चबाने वाले सज्जन से बायीं ओर तीसरी सीट पर बैठे यात्री ने अपने बैग से एक छोटा डिब्बा निकाला और डिब्बे में से कुछ खाने लगा। मैंने सोचा कोई छोटी चीज जैसे टॉफी, बिस्कुट आदि खाकर वह यात्री अपना डिब्बा बंद कर देगा। किंतु जैसा मैंने सोचा था वैसा नहीं हुआ, वह तो भरपेट नाश्ता करना चाहता है। लगभग दस मिनट तक खाने के बाद उस यात्री ने अपना डिब्बा बंद करके रख लिया और रुमाल से मुंह साफ किया। रुमाल चबाने वाले सज्जन ने बोतल से फिर एक घूंट पानी पिया। मेट्रो में खाना-पीना प्रतिबंधित है। फिर भी लोग खाते-पीते हैं! फर्श पर बैठना भी प्रतिबंधित है, किंतु लोग बैठते हैं! कभी-कभी तो लोग वेकृत्य भी मेट्रो में करते हैं जिनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती, जैसे जूते पॉलिश करना, नाखून काटना आदि आदि। इतना होने पर भी हम अन्य देशों से सुविधाओं की तुलना करना शुरू कर देते हैं। फलां देश में इतनी सुविधाएं हैं, फलां देश इतना सुंदर है, फलां देश नियम-कानूनों के पालन में बहुत आगे है! फलां देश में

किसी तरह की कोई समस्या नहीं होती है! तुलना करना और कहना बहुत अच्छा लगता है। किंतु कभी यह भी सोचा है कि उस फलां देश के नागरिक अपने कर्तव्यों का कितना पालन करते हैं! नियमों का कितना पालन करते हैं! हम अधिकारों के लिए सदैव सजग रहते हैं और उनकी मांग करते हैं। हमारे ये अधिकार हैं, हमें संविधान ने ये अधिकार प्रदान किये हैं, हमारे देश ने, राज्य ने हमें यह प्रदान किया है- किंतु कभी यह नहीं सोचते और न ही ध्यान देते हैं कि हमारे कर्तव्य क्या हैं! हम अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का कितना पालन करते हैं! अधिकार और कर्तव्य एक-दूसरे के पूरक हैं, आदान-प्रदान है। जब तक हम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगे तब तक अधिकारों की कल्पना तक नहीं की जा सकती। संविधान, देश और राज्य ने प्रत्येक भारतीय नागरिक के कुछ कर्तव्य भी निर्धारित किये हैं। जिन देशों का उदाहरण हम विकास, समृद्धि, सुख-सुविधाओं आदि के लिए प्रस्तुत करते हैं, उन देशों के नागरिक पूर्ण रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। जापान जैसे छोटे से देश में आयकर विभाग नहीं है। वहां के लोग स्वयं अपना आयकर निर्धारित करते हैं और समय पर जमा करते हैं। क्या हम उनसे यह प्रवृत्ति सीख पाएंगे या सीखना चाहते हैं! इसी प्रकार न जाने कितने देशों में सभी नियमों का पालन किया जाता है। यातायात नियमों का हम कितना पालन करते हैं! नियमों का उल्लंघन करना भारत देश में शान और रौब माना जाता है।

मेट्रो की गति धीमी होने लगी है, स्टेशन आने वाला है। मैं अपनी सीट से उठता हूं, क्योंकि मेरा गंतव्य स्टेशन आ रहा है। रुमाल चबाने वाला सज्जन ने फिर बोतल से एक घूंट पानी पिया है। लगभग चालीस मिनट में छः बार एक-एक घूंट पानी पिया। वह भी वातानुकूलित डिब्बे में, मौसम भी गर्मी का नहीं है। यदि कभी इन्हें एक धंटे तक पानी नहीं मिला और गैर वातानुकूलित डिब्बे में यात्रा करनी पड़ी तो क्या होगा! मैं दरवाजे के पास पहुंचता हूं। यहां तो कई लोग पहले से ही दरवाजे के पास खड़े हैं। मैं धीरे से एक सज्जन से पूछता हूं ‘क्या आप अगले स्टेशन पर उतरेंगे?’

उनका उत्तर होता है ‘नहीं।’

मैं फिर धीरे से कहता हूं ‘कृपया थोड़ा पीछे आ जाइए।’

वह सज्जन मुझे घूरते हुए थोड़ा पीछे की ओर आ जाते हैं और मैं दरवाजे के पास खड़ा हो जाता हूं। मेट्रो प्लेटफॉर्म पर रुकती है, दरवाजा खुलता है। चढ़ने वाले लोग पूरे दरवाजे को घेर कर खड़े हैं। मैं फिर निवेदन करता हूं कि रास्ता छोड़ दीजिए। फिर वही प्रतिक्रिया घूरना और मुंह बनाना। मैं और मेरे साथ और कई लोग दरवाजे के बाहर खड़े लोगों के बीच से रास्ता बनाते हुए डिब्बे से उतर जाते हैं।

मेट्रो स्टेशन में ऊपर-नीचे जाने के लिए सामान्य सीढ़ियों के अलावा स्वचालित सीढ़ियां भी हैं। अधिकतर लोग स्वचालित सीढ़ियों का ही प्रयोग करते हैं। स्पष्ट निर्देश हैं कि स्वचालित सीढ़ियों पर चलना या दौड़ना मना है। किंतु आधे से ज्यादा लोग चलते हैं और कुछ दौड़ते भी हैं। कई बार चलने और दौड़ने से लोग गिर जाते हैं, थोड़ी-बहुत चोट भी लग जाती है। लेकिन हम हैं कि मानते ही नहीं। मैं मेट्रो स्टेशन पर ऊपर-नीचे जाने के लिए स्वचालित सीढ़ियों का प्रयोग नहीं करता। इसका एक कारण तो स्वचालित सीढ़ियों पर लोगों की भागदौड़ है और दूसरा कारण स्वास्थ्य से संबंधित है। कहते हैं कि जितना हम पैदल चलेंगे उतना ही स्वस्थ रहेंगे। सामान्य सीढ़ियों से चढ़ने उतरने से मैं कितना स्वस्थ रहा हूं यह तो नहीं बता सकता। हां लोगों की उछलकूद से मैं जरूर बचा रहता हूं।

सामान्यतः सीढ़ियों से चलकर मैं मेट्रो के बाहर आ गया हूं। अभी भी कई लोग स्वचालित सीढ़ियों पर उछलकूद करते हुए बाहर आए हैं। हम कब शिष्टता और कर्तव्य भावना को समझेंगे और दूसरों से तुलना करने की बजाए वास्तविकता के धरातल पर कार्य कर पाएंगे! प्रश्नों और विचारों के इसी मकड़जाल में उलझा हुआ मैं अपने कार्यस्थल की ओर चला जाता हूं।

कनिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल

जीवन एक यात्रा है और यात्राओं का महत्वपूर्ण संसाधन रेल है। इस तरह यह कहना अनुचित न होगा, रेल और जीवन अन्योन्याश्रित हैं। रेल केवल यात्राओं का संसाधन मात्र नहीं है, इनसे हमारे सपने और अपने दोनों गहरे से जुड़े हुए हैं। रेल यात्रा के साथ जुड़ी हुई जीवन की संवेदनाओं को फिल्म निर्माताओं ने बड़ी शिद्धि से समझा है, तभी बॉलीवुड ने अपनी कई प्रतिष्ठित फिल्मों और गीतों में भारतीय रेलवे को दिखाया है। भारतीय रेल की बॉलीवुड में सहज उपस्थिति हमारा ध्यानाकर्षण करती है।

भारतीय रेलवे ने एक्शन से लेकर रोमांटिक दृश्यों तक की शूटिंग के लिए हमेशा बॉलीवुड का समर्थन किया है। कई फिल्मों में पूरी तरह से रेल यात्रा की कहानी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। यही कारण है कि भारतीय सिनेमा इस महान उपकार के लिए हमेशा भारतीय रेलवे के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। कई बॉलीवुड फिल्मों में आज भी याद की जाती हैं क्योंकि फिल्म या उसके कुछ लोकप्रिय दृश्य ट्रेनों पर फिल्माए गए हैं। कुछ संवाद और दृश्य तो नज़ीर बन गए हैं जैसे “जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी” और “लाइफ में आजतक मैंने एक ट्रेन भी मिस नहीं की” फिल्मों के कुछ प्रसिद्ध संवाद और दृश्य हैं जो भारतीय रेल को बॉलीवुड का स्टार बनाते हैं।

आइये, देखते हैं कि रेल ने बॉलीवुड के माध्यम से जीवन की कौन-कौन सी आहतों को सुन कर मानव मन के दरवाजों पर दस्तक दी है।

- **दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे** : डीडीएलजे का आखिरी दृश्य भारतीय फिल्म इंडस्ट्री का एक ऐतिहासिक सीन बन गया है। वह दृश्य जहां फिल्म में काजोल के पिता अमरीश पुरी उन्हें शाहरुख खान का हाथ पकड़ने की अनुमति देते हैं, फिल्म को एक रोमांटिक और भावनात्मक ट्रैक देता है। “जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी...जा बेटा” सभी डीडीएलजे प्रशंसकों का पसंदीदा संवाद है। महाराष्ट्र के आपटा रेलवे स्टेशन पर राज के साथ सिमरन की बॉन्डिंग का क्लाइमेक्स दृश्य एक अविस्मरणीय महाकाव्य है। रेल परिवार और प्रियजनों को फिर से मिलाने में सहायता करती है।
- **दिल से** : हर किसी का सपना होता है कि वह जीवन में एक बार रेल की छत पर डांस करे और गाना हो “छैया छैया” । व्यक्तिगत रूप से, मैं इस रोमांच और उत्साह का अनुभव करना चाहता हूं। अमर कांत वर्मा (शाहरुख खान) एक लड़की को देखता है और फ्लर्ट करता है। जैसे ही वह चली जाती है, उसका मन ‘छैया-छैया’ गाने तक पहुंच जाता है, फिर ट्रेन की लय के साथ यह गाना वहां सभी को मदमस्त कर देता है। आप देख सकते हैं कि ट्रेन की सीटी गाने के साथ कितनी खूबसूरती से तालमेल बिठाती है और खूबसूरत प्राकृतिक परिवेश दृश्यों में ताजगी का स्वाद जोड़ता है। यह गाना वास्तव में नीलगिरि माउंटेन रेलवे को कवर करता है।
- **चेन्नई एक्सप्रेस** : राहुल (शाहरुख खान) और दीपिका पादुकोण दोनों यात्रा के दौरान रास्ते में मिलते हैं। यह एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है, इस फिल्म में आप दक्षिणी भारत की सुंदरता की झलक को महसूस कर सकते हैं। पूरी फिल्म दक्षिण के सुरम्य स्थानों पर फिल्माई गई है, खासकर जब ट्रेन दक्कन के प्रसिद्ध “दूधसागर झरने” से गुजरती है। फिल्म की कहानी आपको दक्षिण की ओर रेल यात्रा की योजना बनाने और रेल की खिड़की से इन आश्चर्यजनक स्थानों को देखने का मौका भी देती है।
- **कुछ-कुछ होता है** : इस फिल्म में प्यार का त्रिकोण दर्शाया गया है। राहुल (शाहरुख खान) और अंजलि (काजोल देवगन) के बीच एक प्रेम बंधन स्थापित होता है। अंजलि (काजोल देवगन) का राहुल को अपने प्यार को छिपाते हुए छोड़ने का दृश्य एक दुखद हिट है, जो कि रेल पर फिल्माया गया है।

- **“जब वी मेट”** : यह एक रोमांटिक फिल्म है गीत ढिल्लन (करीना कपूर) एक साहसी और मौज-मस्ती करने वाली लड़की है जो अपना जीवन इस अवधारणा पर जीती है कि कोई कल नहीं है। फिल्म की शुरुआत स्टेशन और ट्रेन के दृश्य से होती है जहां वह चलती ट्रेन पकड़ने के लिए दौड़ती है। उसने अपने जीवन में कभी भी ट्रेन नहीं छोड़ी थी। ये दृश्य छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, पंजाब मेल में फिल्माए गए थे। फिल्म के कुछ दृश्य रतलाम रेलवे स्टेशन पर फिल्माए गए हैं, जहां फिल्म एक मोड़ लेती है। गीत की ट्रेन छूट जाती है और वह आदित्य (शाहिद कपूर) पर आरोप लगाती है कि उसकी वजह से उसकी ट्रेन छूट गई। वह उसे अपनी मंजिल बठिंडा ले जाने के लिए मजबूर करती है और यहीं से दोनों के बीच प्यार का सफर शुरू होता है। ट्रेन यात्रा और खुद के प्रति उनका प्यार फिल्म में पूरी तरह से चित्रित किया गया है।
- **स्वदेश** : मोहन भार्गव (शाहरुख खान) एक एनआरआई, एक निजी उद्देश्य से भारत का भ्रमण करता है, भारत की गरीबी को देख कर मन ही मन परेशान होता है। आखिर में भारतीय गांवों की कमी को पहचानता है और अपने देश के लिए कुछ करने की कोशिश करता है। ट्रेन में दिखाए गए यात्रा के दृश्य भारत की दुर्दशा को साकार करते हुए दर्शाए गए हैं।
- **परिणीता** : परिणीता बॉलीवुड की चहेती और अनेक पुरस्कार विजेता फिल्मों में से एक है। इस फिल्म का रोमांटिक गाना “कस्तो माज़ा है रैलये मा” सबसे प्यारा गाना है। गाने को दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे में फिल्माया गया था और कुछ दृश्य आप्टा रेलवे स्टेशन पर शूट किए गए हैं। ट्रेन हिमालय की श्रेणी की प्राकृतिक सुंदरता के बीच से गुजरती है और सेब के जैसे गाल वाले बच्चे सैफ अली खान के साथ यात्रा का आनंद ले रहे हैं। सैफ सवारी के दौरान गाना गाता है और उसके प्यार, परिणीता (विद्या बालन) की कल्पना करता है।
- **आराधना** : अरुण वर्मा (राजेश खन्ना) द्वारा दार्जिलिंग टॉय ट्रेन में ‘रानी’ के रूप में चित्रित वंदना (शर्मिला टैगोर) का सबसे अधिक गाया जाने वाला सदाबहार गीत “मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू” बॉलीवुड के इतिहास में सबसे लोकप्रिय गीतों में से एक है। फिल्म की शूटिंग हिमाचल प्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला में की गई थी। इस गाने में भी दार्जिलिंग हिमालयन टॉय ट्रेन को फिल्माया गया था। राजेश खन्ना शर्मिला टैगोर को सपनों की रानी के रूप में प्रभावित करने की कोशिश कर रहे थे और अपनी जीप की गति एक टॉय ट्रेन से मिला रहे थे। दार्जिलिंग हिमालय रेल यूनेस्को विरासत स्थल की श्रेणी में भी आता है।
- **द बर्निंग ट्रेन** : एक साहसिक फिल्म जिसमें चार बचपन के दोस्तों (अशोक, विनोद, राकेश और रणधीर) और उनकी दोस्ती, प्यार, महत्वाकांक्षा और प्रतिद्वंद्विता के इर्द-गिर्द घूमती कहानी है। “क्या होता है जब ये भावनाएं ट्रेन में बढ़ती हैं?” रेल यात्रा उनकी सभी जटिलताओं का रामबाण इलाज बन गई थी। बर्निंग ट्रेन फिल्म एक उदाहरण है जहां ट्रेन यात्रा की पूरी कहानी देखी जा सकती है। अंदर रेलवे स्टेशन और रेलवे कंट्रोल रूम दिखाई देता है जहां विनोद खन्ना ने रेलवे स्टेशन मास्टर की भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में सफर के दौरान जितेन्द्र को अपना प्यार नीतू कपूर मिलता है।
- **सदमा** : यह बॉलीवुड इतिहास की दुखद कहानियों वाली फिल्मों में से एक फिल्म है। सोमू और भूलने की बीमारी से पीड़ित नेहलता (रेशमी) के बीच चित्रित एक प्रेम कहानी दर्शकों को भावुक होने पर मजबूर कर देती है। रेशमी का ऊटी ब्लू माउंटेन एक्सप्रेस ट्रेन के लिए पागलपन और केट्टी रेलवे स्टेशन का एंटी-क्लाइमेक्स दृश्य, ट्रेन को एक निर्मम हथियार के रूप में पेश करती है।

रेल न केवल लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचाती है, बल्कि फिल्म निर्माताओं, गीतकारों, कहानीकारों और लेखकों को भी प्रेरित करती है। उन्हें रेलवे पर फिल्मों और गानों की शूटिंग करने में बहुत आनंद आता है। भारतीय फिल्म उद्योग हमेशा से ही अलग-अलग शैलियों में ट्रेन पर बॉलीवुड फिल्मों और गाने बनाने का अभ्यास करता है। साथिया

और साधना जैसी फिल्में भी ट्रेन पर फिल्माई गई कुछ हिट बॉलीवुड फिल्में हैं। बॉलीवुड हमेशा रेलवे रोमांस दृश्यों के साथ आता है और दर्शकों के दिलों पर छा जाता है। यहां उन कुछ गानों की सूची दी गई है जिनमें भारतीय रेलवे का दर्शाया गया है :

- गाड़ी बुला रही है
- आओ बच्चों तुम्हें सिखाएं
- बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत
- मुझे अपना यार बना लो
- हम दो प्रेमी
- होगा तुमसे प्यारा कौन
- हाथों की चंद लकीरों का
- सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं
- देख तेरे संसार की हालत
- है अपना दिल तो आवारा
- मैं चली मैं चली
- पल दो पल का साथ हमारा
- साजन मेरा उस पर है

बॉलीवुड की पटकथाओं, दृश्य संयोजनों और गीत फिल्मांकनों में भारतीय रेल की उपस्थिति उत्साहवर्धक ही नहीं, बल्कि फिल्म निर्माण में भारतीय रेल की महत्वपूर्ण भूमिका की साक्षी है। मुझे भारतीय रेल में सेवा देने पर गर्व है।

फार्मासिस्ट
उत्तर रेलवे, मंडल चिकित्सालय,
फिरोजपुर

-“किसी किशती पर अगर फर्ज का मल्लाह न हो तो फिर उसके लिए दरिया में डूब जाने के सिवाय कोई चारा नहीं।”

-“आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालन शक्ति है।”

- “कायरों के मध्य सत्य भी गूंगा हो जाता है।”

“मुंशी प्रेम चंद”

-“कर्म करना जीवन के आनन्द के लिए आवश्यक है। कर्म करते समय मनुष्य अपने दुःख को भूल जाता है।”

“स्वामी रामतीर्थ”

आधुनिक जीवन शैली की तेज रफ्तार और भाग दौड़ से भरी जिंदगी में सेहत का विषय बहुत पीछे रह गया है और नतीजा यह है कि आज युवा अवस्था में ही हम बहुत सी बीमारियों से ग्रसित हो गए हैं। आज हमारे खान-पान, रहन-सहन इत्यादि में बहुत बदलाव आ गया है। आधुनिकता कि इस दौड़ में हम स्वास्थ्य में बहुत पीछे रह गए हैं। परंतु अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, कहते हैं कि जब जागे तब सवेरा।

अच्छी सेहत हमारे जीवन में किसी अनमोल खजाने से कम नहीं है। परंतु यह सोचने का विषय है कि यह अनमोल खजाना हमें विरासत में मिला या हमारी स्वयं कि कोशिश का परिणाम है अगर हमारे बाप दादा या हमारे पूर्वज सभी ने स्वस्थ और दीर्घ जीवन व्यतीत किया है और सदैव बीमारियों से दूर रहे तो यह सोचना कि हमारी आयु भी दीर्घ होगी, हमारे जीन हमें बीमारियों से बचा के रखेंगे यह सोचना गलत होगा हमें बीमारियों से बचने के लिए अपने खान-पान, व्यायाम, उचित नींद लेना, तनाव से बच कर रहना, स्वस्थ मानसिकता इत्यादि सभी पर ध्यान देना होगा। एक स्वस्थ इंसान के लिए सारी दुनिया खूबसूरत प्रतीत होती है, और इसके विपरीत अस्वस्थ इंसान अपनी इच्छा से जी भी नहीं पाता। उसका सारा समय अपनी बीमारी के विषय में सोच कर ही व्यतीत हो जाता है। हर किसी को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। एक अस्वस्थ इंसान स्वयं तो तकलीफ का सामना करता है अपितु उसके साथ रहने वाले भी तकलीफ से गुजरते हैं। अगर हम स्वस्थ हैं तो बहुत ही अच्छी बात है परंतु अगर हम स्वस्थ नहीं हैं तो हमें अपने-अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। सेहत के लिए समय जरूर निकालें, सेहत है तो सब कुछ है वरना जीवन नीरस है। सेहतमंद जीवन का एक दिन बीमारी के साथ सैकड़ों दिनों से बेहतर है। ये जीवन परमात्मा की देन है। इसके महत्व को समझे, खुद भी स्वस्थ रहे और दूसरों को भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करें ताकि सबका जीवन सुखमय और आनंदमय हो। एक स्वस्थ नागरिक ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है, और स्वस्थ व मजबूत देश का निर्माण होता है, कहा भी गया है पहला सुख निरोगी काया।

सुपुत्र कृतिका काम्बोज, लिपिक, सुरक्षा विभाग
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

-“हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।”

"राहुल सांकृत्यायन"

-“राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।”

"सुब्रमण्यम स्वामी"

- “नींद आती ही नहीं धड़के की बस आवाज से तंग आया हूं मैं इस पुर - सोज दिल के साज से।”

"भारतेंदु हरिश्चंद्र"

सुन लो मेरे देश वासियो समशेर कुमार	हो ना हताश अर्चना मीणा
सुन लो मेरे देश वासियों धरा पुकारती। मिल-जुल एक रहो आपस में हम सब हैं एक भारती।। एक भूमि है ऋषि-मुनि और वीर सपूत जवानों की। इसका कण-कण गाथा गाता वीरों के बलिदानों की।। सत्य अहिंसा प्रेम शांति की हम सब करते आरती। मिल-जुल एक रहो आपस में हम सब हैं एक भारती।। सुन लो मेरे देश..... हिन्दू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, इसाई आदि भाई का नाता है। सब में खून एक सा बहता सबका एक विधाता है।। बच्चा-बच्चा बने यहां पर सत पथ रथ का सारथी। मिल-जुल एक रहो आपस में हम सब हैं एक भारती।। सुन लो मेरे देश..... जन्म लिया है इसी धरा पर इसी धरा पर मरना है। तन मन धन सब अर्पण हमको इसी धरा पर करना है।। अन्न और जल देकर हमको यही धरा है पालती। मिल-जुल एक रहो आपस में हम सब हैं एक भारती।। सुन लो मेरे देश..... कारखाना सहायक, सिगनल वर्कशॉप, उत्तर रेलवे, गाजियाबाद	तू क्यों हताश है क्या हुआ अगर असफल हुए तो खाली हाथ तो तू अब भी नहीं अनुभव तो मिला है हो ना हताश तू सीख अपनी गलतियों से रुकना नहीं तुझे अभी तो पूरा सफर बाकी है कर एक नई शुरूआत नई उम्मीदों और नई कोशिशों के संग हो ना उदास तू देख अपनी असफलताओं को बदलने इनको सफलताओं में चलना है तुझे फिर से हो ना हताश तू.....! कनिष्ठ लेखा सहायक, प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस नई दिल्ली

-“क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो उसको क्या दंतहीन विष रहित, विनीत, सरल हो।”

"रामधारी सिंह दिनकर"

-“एक राष्ट्रभाषा से हमारी संस्कृति एक होगी और हमारा राष्ट्र दृढ़ होगा।”

"अनंतशयनम आयंगर"

होता जिसका भाई बड़ा मुदित कुमार रस्तोगी “इंद्रायण”	बिरह गीत राम करन
गया साथ अपने मित्रों के, दूर शहर से, मेले में जमकर खेले खेल-खिलौने, मजा आ गया मेले में।। सर्कस देखा, कुल्फी खायी, खायी मिठाई मेले में ना जाने कब हुआ अंधेरा, याद रहा ना मेले में।। तब मन में एक शंका उभरी, याद पिताजी की आयी डांट पड़ेगी खूब मार संग, अब तो यह नौबत आयी।। संग पिताजी के आज तो, होगा माँ का पारा चढ़ा दादी-दादा भी नहीं घर पर, संकट मन मे बहुत बड़ा।। डरते-डरते घर पर पहुंचा, भाई निकट हो गया खड़ा कान पकड़ कर घर में लाया, लेकिन मार से लिया बचा।। पास बिठाकर, प्यार से देता, मेरी गलती मुझे बता साथ समय के बड़े हो रहे, अच्छी नहीं ये भूल सदा।। माता-पिता की हम हैं आंखे, दिन छिपते ही आओ घर गलती पर तो डांट पड़ेगी, मानो कहना झुकाकर सिर।। सबसे ज्यादा प्यार करें वे, यह सब मुझ को सिखलाता भाई बताता अपने अनुभव, मन रोमांच से भर जाता।। अच्छे-बुरे और विकट समय में, रहता सदा ही साथ खड़ा मन में सदा एक ढांडस रहता, होता जिसका भाई बड़ा।। गाड़ी प्रबंधक, लुधियाना, उत्तर रेलवे, फिरोजपुर	कब खोलिबो अपना किवाड़ ऐ हरि । मरी-मरी जिए ये सेवकवा तुहार ऐ हरि ।। लड़िका से बूढ़ा हुए कर के भजनिया । तब हूं न गया आप की नजर में मेरी नादनियां ।। अब की बार नाथ मोहि दरस दिखावा ऐ हरि । मेरी कमीपन व कुटिलता को ठुकरावां ऐ हरि ।। मरी-मरी जिए ये..... निरर्थक जनमवां जो बीत जाई भगत के ऐ हरि । आज के बाद तुम पर कोई न विश्वास करि ।। ध्यानवां लगाय-लगाय कर, हम हुए पगलवा ऐ हरि । कब लेबा आय सुधिया, हमार ऐ हरि । मरी-मरी जिए ये..... बिरही तुम्हारे बिरह में मरी-मरी जाय हो हरि । फिर भी वह तुमको न सुहाय हो हरि ।। कैसी ये है तुम्हारी प्रभु हो विडम्बना । कब बिरही आयगी नाचत-गावत तुम्हारे अंगना ।। सच्चे भक्तों को दिन व रात भयल एक सार हो हरि । राम करन सदा देखें रहिया तुहार हो हरि ।। कार्यालय सहायक, लेखा विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

-“क्योंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसीलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिंदी को अपनी भाषा समझकर अपनाएं।”

“डॉ. बी. आर. अम्बेडकर”

अनासक्त नन्दिनी कपूर	सरकारी कर्मचारी पंकज सूद 'मासूम'
भीतर से वो तत्व निकाल स्वयं के भीतर स्वयं को पहचान उपेक्षा मिलने पर देवता दुखी होते हैं क्या ? वो फिर भी अनासक्त भाव से साकाश देते हुए उड़ जाते हैं। तुम मेरे वजूद को मानो ये जबरदस्ती कैसे कर सकती हूँ, मैं मैं हूँ, क्योंकि उसने मुझे यहाँ इस अध्याय पर रखा है विकर्म कड़ा है मुझे गुप्त ही रहना है उपराम ही रहना है तिरस्कार के प्रति तो प्रेम के प्रति भी वरिष्ठ अनुवादक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली	सरकारी कर्मचारी, देश की शान, कामना हमारी, सदा देश की पहचान। कठिनाइयों में भी, वे हैं पराक्रमी, सेवा का मार्ग अपने, वे धैर्य से चलते हैं। कर्तव्य निभाने में, लगे दिन रात, समर्पण से बढ़ते, जाती है उनकी महत्ता। सार्वजनिक सुविधाओं की, हैं वो हद तक जिम्मेदार, देश की प्रगति में, उनका है यह योगदान अनमोल। सेवा में उनकी, बढ़ता उत्साह, देश के विकास में, रहती है उनकी महत्वपूर्ण भाषा। सरकारी कर्मचारी, होते हैं समृद्धि के सार, उनकी मेहनत और संघर्ष से, बनता है समृद्ध आदर्श यहाँ। वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, हाइड्रोजन फ्यूल सेल, प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

पाठकों से अनुरोध

पाठक, राजभाषा पत्रिका “सरस्वती संगम” के आगामी अंकों में प्रकाशन हेतु तकनीकी लेख, यात्रा संस्मरण, पर्यटन संबंधी जानकारी, कहानियां, नाटक, कविताएं, गीत, गजल, जीवनी व रेल तथा हिंदी से संबंधित जानकारी, पूर्ण लेख व रचनाएं भेज सकते हैं। प्रकाशन हेतु भेजी गई रचनाएं स्वलिखित व अप्रकाशित होनी चाहिए। “सरस्वती संगम पत्रिका” में रेलकर्मियों, उनके परिवार के सदस्य तथा सेवानिवृत्त रेलकर्मियों भी अपनी रचनाएं प्रकाशन हेतु भेज सकते हैं। शीघ्र प्रकाशन में सहयोग हेतु अपनी रचनाएं ई-मेल से rbahqnr@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

“सरस्वती संगम पत्रिका” में प्रकाशित होने वाली रचनाओं पर रेलवे बोर्ड के पत्र सं. हिंदी/99/रे.रा.भा./3 के अनुसार निम्नलिखित मानदेय दिए जाने का प्रावधान है:-

लेख/कहानी/नाटक 1,000/- रु. (एक हजार रु. मात्र)

कविता/पुस्तक समीक्षा 400/- रु. (चार सौ रु. मात्र)

कार्टून/चित्र 300/- रु. (तीन सौ रु. मात्र)

भ्रष्टाचार : एक गंभीर बीमारी आरती भल्ला	मेरा बचपन प्रवीण कुमार झा
भ्रष्टाचार 'बीमारी' बन कर रहा राष्ट्र-गरिमा को कलंकित, यह देश के विकास में, करता कई बाधाएं अनुचित। नहीं था जब भ्रष्टाचार देश में, भारत 'सोने की चिड़िया' कहाता था, मौजूद उच्च नैतिकता व मजबूत सामाजिक व्यवस्था के बल पे, भारत 'विश्व गुरु' बन सबको 'वासुधैव कुटुंबकम्' का पाठ पढ़ाता था। अंग्रेजों का गुलाम जब बना भारत, नैतिकता डोली और गरीबी छाई, भारतीयों का हुआ आर्थिक और सामाजिक शोषण, सत्तारूढ़ जन की मति बौराई। भ्रष्टाचारी राजनेताओं द्वारा होकर स्वीकृत, हर दिन बढ़ता जाता रहा, दीमक की तरह राष्ट्र संसाधन चूस के भ्रष्टाचार खुद पर इठलाता रहा। निज स्वार्थ और लोभ के वशीभूत होकर के जो भ्रष्टाचार का मार्ग चुनते हैं, भारत मां के कपूत बन मां को ही लूट लेते हैं। भारत को विकसित बनाना स्वप्न सपना ही रह जाएगा, यदि भ्रष्टाचार यूँ ही अपनी जड़ें फैलाता जाएगा। सत्यनिष्ठा का मार्ग यद्यपि सरल और सुगम्य है, पर इसपे चलने वालों की संख्या उंगलियों पर गिन सकते हम हैं। देश को खोखला बनाता भ्रष्टाचार, आओ करें मिल के इसपे वार। आओ सरदार पटेल की वर्षगांठ पर ये संकल्प लेते हैं, सजग और सतर्क रहकर इसका नामों निशान मिटा देते हैं। इस युग में यदि भारत को विकसित हमें बनाना है, भ्रष्टाचार को जड़ से नष्ट कर सत्यनिष्ठा और नैतिकता का पाठ पढ़ाना है। जूनियर इंजीनियर, आई.टी. लेखा विभाग, बड़ौदा हाउस	कहाँ गया वो मेरा बचपन वो नादानी और वो लड़कपन चिंता से मुक्त वो जीवन कितना था उन्मुक्त वो जीवन चहका फिरता मैं वन-उपवन अपने गाँव की अमराई में अपने खेतों की क्यारी में कितना सुन्दर वो घर-आंगन कितना प्यारा अम्बर-कानन त्योहारों का जब मौसम आता मुझको था कितना वो भाता खेत और खलिहान निराले लगते थे वो कितने प्यारे कहां खो गई मेरी दृष्टि बदली सी अब लगती सृष्टि खेत खलिहान निराले लगते थे वो कितने प्यारे अब लगता कुछ हो सा गया सब कुछ जैसे खो सा गया जीवन का उपहार है बचपन इस जग का आधार है बचपन काश लौट आता फिर वो बचपन ॥ आशुलिपिक ग्रेड-1, टीएमसी, प्रधान कार्यालय बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

-“वही साहित्य सार्थक है, उसी साहित्य का अस्तित्व है, जो हमें मानवता की ओर कदम बढ़ाने में सहायता कर सके”
“भगवती चरण वर्मा”

रिक्त स्थान अमित कुमार माहेश्वरी	नरम चट्टानें हरीतिमा “सुभाष”
जब टूट जाता है एक पहिया, किसी गाड़ी का तब उस गाड़ी को चलाने के वास्ते, टूटे पहिए की जगह, दूसरा लगाते हैं, मगर क्या रिक्त स्थान वास्तव में भर पाते हैं ? जब टूट जाती है एक टाइल, आपके आंगन की तब उस फर्श को चलाने के वास्ते, टूटी टाइल की जगह, दूसरी लगाते हैं, मगर क्या रिक्त स्थान वास्तव में भर पाते हैं ? जब उठ जाता है, बचपन में साया मां-बाप का तब उस अनाथ बच्चे को पालने के वास्ते, सूनी गोद में उसको बिठाते हैं, मगर क्या रिक्त स्थान वास्तव में भर पाते हैं ? जब टूट जाता है अचानक साथ, सात जन्म का तब जीवन की गाड़ी चलाने के वास्ते, दूसरा जीवन साथी ढूंढ लाते हैं, मगर क्या रिक्त स्थान वास्तव में भर पाते हैं ? कोशिश की जाती है, रिक्त स्थान भरने की, नए पहिए से गाड़ी चलाने की, नई टाइल से, आंगन की लाज बचाने की, अनाथ बच्चे के लालन पालन की, वर्षों से सूनी गोद में फूल खिलाने की, फिर से जीवन को पटरी पर लाने की, मगर क्या हम सच में सफलता पाते हैं ? क्या हम रिक्त स्थान वास्तव में भर पाते हैं ? अरे इन सब में हम तुम क्या हैं ! हम तुम तो बस अपना-अपना किरदार निभाते हैं ! बस अपना अपना किरदार निभाते हैं ! मगर क्या रिक्त स्थान वास्तव में भर पाते हैं ? चीफ फार्मासिस्ट, मंडल चिकित्सालय, उत्तर रेलवे, मुरादाबाद।	आलोलित लहरों ने लहरों का सुंदर सेतु बनाया है, उसके चंचल मन ने मुझसे स्नेहबंध निभाया है। मेरे अवलोकित हृदय में रजत कणों का बंधन है, उसकी अविचल धाराओं ने गीत प्यार से गाया है। विकल-विकल व्याकुल होकर मन उच्छवासित होता है, विराट कल्पना कर के भी हृदय अभिलाषित होता है। छू नयन-नभ आकांक्षाएं पलकों पर विराजित होती हैं, निशा पटल पर ताम्रपत्र रेखांकित दिनकर सजता है। विभा किरण ले चली हवाएं, अंधकार मिटने को है, नीरनिधि यौवन पर है रजनी नवल हृदय सजने को है। व्योम पटल पर उमड़े हैं बादल आकाश मसीहा लगता है, सावन की बौछारों से जीवन इंद्रधनुषी- सा सजता है। चट्टानों सी नरम हो गई, लहरों के चंचल मन से, सैकड़ों शंख निकल उठे हैं, शैलों की दरारों से, बिगुल बजा कर नाद कर दिया, लहरों ने भी ज्वारों से। शशि नवल किशोर बना है, चंचल शोख हवाओं से। मेघ गरजते आकुल होकर, व्याकुल नज़र है लहरों की, मन अभिमानी कभी नहीं है, नदियां मिली अदाओं से। कल कल करती जब हंसती है, जलधि का आकर्षण है, व्योम व्यग्र होकर भी आनंदित, मिलता सजल लताओं से। कभी नहीं मन भरता है चंचल शोख रजत कणों से, सूर्य किरण से इंद्रधनुषी रंग रेतों पर चमकने से। जब हृदय आलोकित होता है, तब रूप नया निखरता है, आकाश मही नित एक हो रहे, मोहक मन मनोरम से। पत्नी श्री सुभाष चन्द्र, लेखा विभाग, प्रधान कार्यालय उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

सचल दूरभाष यंत्र दिनेश चंद	तीज नीता सक्सेना
कोई शौक में इसको चला रहा ,कोई मजबूरी में जला रहा, गुण अवगुण से भरपूर रहा ,कोई इस्तेमाल से हरा रहा । ये अजब गज़ब की चीज बनी ,किसको थोड़ी और किसे घनी, खान पीन आसान त्यागना , पर इसे छोड़ना राड़ बनी । कोई रोग से इसके ग्रसित है,कोई अपनाने में भ्रमित है, बचा हुआ है क्या इससे ,जो नहीं इसमें वर्णित है । कोई जिन्दगी दाव पर लगा रहा ,कोई जिन्दगी चाव में बढ़ा रहा, है अलग अलग सबकी रूखाहिश ,मन में जो अपने जगा रहा । नहीं किसी से मतलब कोई ,अकेले में लेके बैठा है , बातचीत तो दूर रही ,परिवार बिछुड़ कर बैठा है । सब अपने में ही मगन हुए,मिलने जुलने सब खत्म हुए, इस मोबाइल की खातिर तो ,चलने फिरने भी खतम हुए । खेलेंगे तो मोबाइल पर ,मिल लेंगे तो मोबाइल पर , घूमेंगे तो मोबाइल पर ,पढ़ लेंगे तो मोबाइल पर । आना जाना मिलकर खाना , अब दूर की बात हो गई है हँसना मिल बैठ गपशप करना ,अब चलन पुरानी हो गई है । अकेले हँसना बातें करना ,ये रीत पुरानी हो गई है , दुनिया मुट्ठी में कर बैठा , ये बात पुरानी हो गई है । घड़ी टार्च रेडियो कैमरा ,खत और तार,नहीं चाहिए , चाहिए तो मोबाइल बस ,बटुआ और स्वांग नहीं चाहिए । दिनेश बगैर मोबाइल तो कुछ खोया-खोया लगता है , गर सात समंदर दूर रहे ,घर में सोया सा लगता है । सहायक संकेत एवं दूर संचार इंजीनियर सिगनल कारखाना, (उ.रे.) गाजियाबाद	दिन, महीने, साल यूं ही गुजरते जाएंगे, हम प्यार से तीज का त्यौहार मनाते जाएंगे। लाल, गुलाबी, हरे परिधान, घी- घेवर की वही मिठास, हम साथ लिए आएंगे , हम फिर से तीज मनाएंगे 2 फिर से सूरज निकलेगा ,फिर से चंदा आएगा, जब लाखों तारे छा जाएंगे, हम फिर से तीज मनाएंगे..2 इन रिमझिम - रिमझिम बूंदों में, जब मन हर्षित हो जाएंगे, चूड़ी, कंगन, मेंहदी, बिंदी, मन को खींचे लाएंगे, हम फिर से तीज मनाएंगे.....2 आंखों में विश्वास, दिलों में उल्लास, खिलखिलाते चेहरों संग, फिर महफिल सजाएंगे, हम फिर से तीज मनाएंगे.....2 जब प्रकृति हरी हो जाएगी और सावन लहराएगा, पग - पग में नृत्य, मन - मन से गीत सुनाएंगे, हम फिर से तीज मनाएंगे.....2 सखियों के बीच, पिया संग अठखेलियों की , वही पुरानी रीत हम आज भी निभाएंगे, हम फिर से तीज मनाएंगे.....2 वरि.अनुवादक ,लेखा विभाग प्रधान कार्यालय .उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

–“वे मुस्कराते फूल नहीं जिनको आता है मुरझाना, वे तारों के दीप नहीं जिनको आता है बुझ जाना।”

“महादेवी वर्मा”

माँ	सेवा निवृत्ति
मंजू रानी	सुभाष यादव
दुनियां में मुझको माँ तुम ही लाई, रहना सदा बनकर मुझे तेरी ही परछाई । तुम हो ममता की मूरत, कितनी भोली है तुम्हारी सूरत । तुमने देखा था मेरे लिए एक सपना, जिसे पूरा करने को मैंने बनाया लक्ष्य अपना । तुमसे ही मुझको मिलती थी हिम्मत और ताकत, तुम्हारे सपने को पूरा करना ही बन गई मेरी चाहत । तुम्हारे साथ से ही बुलंद होता था मेरा हौसला, तुम्हारे जाने से ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर से प्राण ही निकला । आज चारों ओर शोर है कामयाबी का, लेकिन मन में एक खालीपन है तुम्हारे जाने का । जीवन के हर पड़ाव पर मुझे तुम्हारी आस है, फिर भी तुम्हारे न होने की निराशा साथ है । जीवन की सच्चाई यही है सबको एक दिन जाना है, फिर भी ना जाने क्यों इस बात से मेरा मन बेगाना है। रह-रह कर पता नहीं क्यों दिल ये मेरा कहता है, एक दिन तुम्हें लौटकर आना है, एक दिन तुम्हें लौटकर आना है..... कनिष्ठ अनुवादक, मंडल कार्यालय, उत्तर रेलवे, फिरोजपुर	सफेद बाल हो गए, नेत्र लाल हो गए, हाड़ से अलग खाल हो गए, क्योंकि साठ साल हो गए । थान से फटे रूमाल हो गए, वृक्ष से कटे डाल हो गए, नदी से निकले नाले हो गए, क्योंकि साठ साल हो गए । बच्चे समझे पापा मालामाल हो गए, फिरते आगे पीछे बाप की ढाल हो गए, की खूब खातिरदारी, क्या कमाल हो गए, क्योंकि साठ साल हो गए । रक्त स्वामी को, धन बच्चों को लुटाकर, हम कंगाल हो गए, घर के मसले अब आटा-दाल हो गए, प्यारे पापा बच्चों के लिए जंजाल हो गए, क्योंकि जीवन के साठ साल हो गए । अब क्या बताएं नौकरी से क्या लाए हैं, घर से जवानी ले गए थे लौटकर बुढ़ापा लाए हैं । लेखा सहायक, लेखा विभाग, प्रधान कार्यालय उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

- “हिंदी भारत की अमर वाणी है, यह स्वतंत्रता और संप्रभुता की गरिमा है।”

“राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी”

चल मुसाफिर क्या देखता है...

आशीष कुमार मिश्रा

रचल मुसाफिर क्या देखता है.....

हा नहीं किसी में खुदा का खौफ भी अब तो,
फरिश्ता भी अब ज़मीर कौड़ियों के मोल बेचता है।
दफन हुआ शहरे- एहसास मतलब के जलज़ले में,
अब कहाँ अपना मकाँ और रोशन-सहर ढूँढता है।

चल मुसाफिर क्या देखता है.....

तुझे एहसासे सुकुं है, अपने चौड़े सीने का,
पर वो खंज़र तो हरदम पीछे से घोंपता है,
उम्मीद न कर उससे आब-ए- हयात (अमृत)की,
वो तो दवा के चल मुसाफिर क्या देखता है...नाम पर
भी ज़हर बेचता है।

चल मुसाफिर क्या देखता है.....

लगा दी दांव पर जिसकी खातिर सर की पगड़ी भी,
आज वही शख्स मेरी पगड़ी सरे बाज़ार बेचता है,
आवाज़ मत दे, कोई नहीं आएगा नक्कारखाने से,
बहरों के मोहल्ले में भी वो आवाज़ बेचता है।

चल मुसाफिर क्या देखता है...

दरियादिली दिखाना ,पर बा- होशो- हवास
वो शख्स उंगली पकड़कर पहुंचा थामता है,
कदमों में वो गिर जाए गर , रहना बा- अक्ल
वो मतलब निकलते ही सीधा गर्दन नापता है।

चल मुसाफिर क्या देखता है...

संगदिल ही सही, पर आएगा जरूर तेरी मय्यत पर,
वो शहर भर में कफ़न का कारोबार देखता है,
जी खराब न कर आशीष, बेमुरौव्वत दुनिया में,
वो बारिश में भी दरिया को सैलाब बेचता है।

चल मुसाफिर क्या देखता है...

कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा विभाग,

प्रधान कार्यालय उत्तर रेलवे

धरा की पुकार

विशाल सिंधु

जवानों की आवाज, बदलने की राह,
संघर्षों में खोजते, खुद को वो बार-बार।
सपनों की उड़ान, करते हैं जीवन की सवारी,
हाथों में हैं हौसले, चलते हैं आगे बढ़ करी।

मुश्किलों की बाधाएँ, आती हैं बरसाती बारिश,
पर जवान निरंतर, करते हैं अपने मार्ग पर चर्चा।
होने की कल्पना, उनकी आँखों में बसी है हमेशा,
संघर्षों की मार्ग में, वे हैं मजबूत और निरंतर।

चुनौतियों से जूझते, बढ़ते जाते हैं आगे,
जवानों की ऊर्जा, है उनकी आशा की मिसाल।
सपनों की बिना बाधाएँ, उनकी मिट्टी है अनमोल,
संघर्षों की राहों में, उनका यह जीवन है सुंदर सोल।

सहायक कै. एवं वै./यांत्रिक
प्रधान कार्यालय उत्तर रेलवे
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

- “यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति
में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो
सकती है”

“चक्रवर्ती राजगोपालाचारी”

- “सच्चा साहित्य वही है, जो विद्वानों के लिए चाहे
जितना गूढ़ हो, परंतु जनसाधारण भी उसे भली भाँति
समझ सकें।”

“जैनंद्र कुमार”

-“सपने वो नहीं होते जो आप नींद में देखते हैं, सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।”

“डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम”



निकला हूँ रेल के सफ़र में, मैं अपना मुक़ाम ढूँढ़ रहा हूँ
स्टेशन कई आए और गए, मैं 'सफर' में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ ।

खेत, मैदानों के बीच से रही है भाग

जल्दी पहुँचने की इसमें है आग ।

इन्हीं मैदानों में मैं, खेलने को एक मैदान ढूँढ़ रहा हूँ।

मैं सफर में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ

चले जा रहा हूँ रात और दिन, ठहराव भी रहा हूँ गिन

'भाग-दौड़' में पीछे छूटी, मैं अपनी 'मुस्कान' ढूँढ़ रहा हूँ ।

मैं सफर में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ

लंबी दूरी का ले लिया है टिकट, समस्याएँ भी कई आई हैं विकट

'आखिरी स्टेशन' अभी कहाँ है निकट ।

यादों की धुंध में, पैरों के निशान ढूँढ़ रहा हूँ।

मैं सफर में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ

निकला हूँ इस सफर में पाने को अपनी मंजिल

'लाल सिग्नल' के ठहराव पर भी घबरा जाता है दिल ।

छूट गया था जो मुझसे, अपना वो सामान ढूँढ़ रहा हूँ।

मैं सफर में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ

कई मुसाफिर रहे चैन को खींच,

है चाहते, ये सफर रुक जाए बीचों-बीच ।

पटरी से ना उतरे रेल, ऐसा इंतज़ाम ढूँढ़ रहा हूँ ।

मैं सफर में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ

निकला हूँ रेल सफ़र में, मैं अपना मुक़ाम ढूँढ़ रहा हूँ
स्टेशन कई आए और गए, मैं सफर में किस्से तमाम ढूँढ़ रहा हूँ ।

व.अनु.अधि.,लेखा विभाग,
प्रधान कार्यालय उत्तर रेलवे
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

हिन्दुस्तान की है पहचान
ये है देश की सर्वोच्च प्रधान,
कहलाती देश की जीवन रेखा।
पूरा करती है लेखा-जोखा।

अंग्रेजों का अंग्रेजी साल
1853 बना जब मिसाल,
मुंबई से **थाणे** जब दौड़ी
सवारी थी जब थोड़ी-थोड़ी।

रेलवे बोर्ड इसकी पहली पीढ़ी
17 जून 68 मंडल की सीढ़ी,
13 लाख कर्मचारियों का दल
चखते 7 हजार **स्टेशन** का फल।

मालगाड़ी है इसकी जान
आमदनी की है बड़ी खान,
सोने, चांदी, हीरे और मोती
अनाज, फल व सामग्री ढोती।

मेल एक्सप्रेस और सुपरफास्ट,
राजधानी, **शताब्दी** इनकी काट
फास्ट पैसेंजर और पार्सल गाड़ी
ढोती यात्री व माल की सवारी।

युवा, **तेजस** और गरीब रथ
पूरा कर लोगों का **मनोरथ** ,
वंदे भारत व स्पेशल दुरंतो
पूरी करती लोगों की **मन्नतें** ।

एसी, स्लीपर जनरल कोच
सकारात्मक है इसकी सोच,
करवाती है आराम की सवारी
चाहे हो धनवान या भिखारी।

पदक्रम में सर्वोच्च अधिकारी
उसके बाद आते हैं कर्मचारी,
सब मिल-जुल कर चलाते रेल
यहीं है उनकी रोजी-रोटी का खेल।

गार्ड, **ड्राइवर** व **स्टेशन मास्टर**
(बाबूजी) हो या **टिकट कलेक्टर** ,
गैंगमैन, कुली या हो दफ्तरी
सब करते हैं मिलकर **नौकरी** ।

परिचालन, वाणिज्य, सिग्नल, यांत्रिक स्टोर,
सुरक्षा, स्वास्थ्य हो या **कार्मिक**,
इंजीनियरिंग से लेकर सभी प्रभाग
ये सब हैं इसके संबंधित विभाग।

रेल मिनिस्टर है राजनीतिज्ञ प्रधान
लेता है राज्य मिनिस्टर संज्ञान,
रेल बोर्ड अध्यक्ष से **महाप्रबंधक**
अंतिम सीढ़ी है मंडल रेल प्रबंधक।

पूर्व से लेकर पश्चिम तक
उत्तर से लेकर दक्षिण तक,
करती यातायात को निहाल
फैलाकर अपना चौतरफा जाल।

पर्वत घाटी हो या तालाब
पार कर ले जाती सैलाब,
चाहे दिन हो या काली रात
घर पहुंचाकर कराती मुलाकात।

गतिमान से बनकर **हमसफर**
सवारी मंजिल तक पहुंचाकर ,
बन सामाजिक एकता का प्रतीक
करती है सबका मंगल स्वास्तिक।

छोड़ अध्यापक आया **अशोक**
रेल को अपनाकर पूरे किए शौक,
घूमता रहेगा जब तक रेल का पहिया
मिलता रहेगा तब तक हमको रुपया।

मुख्य कार्यालय अधीक्षक
नई दिल्ली स्टेशन, उत्तर रेलवे

भारत एक अतुल्य-अद्वितीय स्थान नितिन कुमार	परमवीर चक्र विजेता सूबेदार मेजर योगेन्द्र सिंह यादव भूप सिंह यादव
भारत माँ की आज़ादी का सपना, जब शूरवीरों को लगा अपना, दिए कई इम्तेहान और अनगिनत बलिदान, भारत एक अतुल्य- अद्वितीय स्थान ।। मंगल की बंदूकों से, बंकिम के वंदेमातरम तक, मनु की तलवारों से, सुभाष की हिंद फौज तक, गांधी के सत्याग्रह से, भगत सिंह के इंकलाब तक, गुलामी के अंधकार को हरा, स्वतंत्रता की रोशनी लिए, चली आई एक नई सुबह, लिए नई उम्मीदों की सुगबुगाहट, भारत एक अतुल्य -अद्वितीय स्थान ।। निरंतर सामाजिक बदलावों से, सुदृढ़ होती देश की उन्नति की राह, दूरदर्शी योजनाओं से, सुगम होती, गरीब की समृद्धि की चाह, भारत एक अतुल्य -अद्वितीय स्थान ।। नारी को मिल रहा सम्मान, दे रही है विकास में योगदान, शिक्षा का मिल रहा अधिकार, अनुसंधान से बढ़ता ज्ञान, लघु उद्यमिता से जन- जीवन में आता सुधार, सशक्त होती अर्थव्यवस्था है परिमाण भारत एक अतुल्य- अद्वितीय स्थान ।। विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अंतरिक्ष से जटिल क्षेत्रों में, महान क्षमताओं को धारण कर विश्वगुरु बन, नेतृत्व करता, भारत एक अतुल्य- अद्वितीय स्थान ।। मेक इन इंडिया अभियान से, टेक्नोलजी और स्टार्टअप्स के प्रयास से,विद्युत यातायात से, विदेशी निवेश एवं कौशल विकास से, होगा, आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार, भारत एक अतुल्य - अद्वितीय स्थान ।। विभिन्न, धर्म, भाषा और संस्कृतियों का संगम, अनेकता में एकता का यहाँ उचित समागम एक साथ त्योहार मनाते, सभी यहाँ हर्षित, योग की जननी के रूप में, भारत विश्व भर में चर्चित, होता है यहाँ अतिथि का देवतुल्य सम्मान, भारत एक अतुल्य - अद्वितीय स्थान ।। जूनियर इंजीनियर, यांत्रिक विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।	परमवीर योगेन्द्र यादव टाईगर हिल का शेर, गरजा सीना तानकर जैसे बब्बर शेर। 4 जुलाई 1999, कारगिल युद्ध का हीरो, दुश्मनों को कर दिया गोलियों से ढेर।। इस परमवीर ने अपनी छाती में खाई 17 गोली, हार ना मानी गरज कर भारत माँ की जय बोली। एक तरफ अकेला वीर था खून से सारा लथपथ, उधर बंकरों में छिपी थी दुश्मनों की भारी टोली। डटकर किया मुकाबला, खाई सीने में गोली, लाज बचाई रितंगे की, फिर भारत माँ की जय बोली।। धन्य है वह वीरांगना सपूती माँ, धन्य है वो गांव, जिसने जन्मे योगेन्द्र ने कमाया वीरता में नाम। है तिरंगा मातृ-भूमि की आन, बान और शान, गाड़ दिया टाईगर हिल पर, देश का अमर निशान। 16000 फुट ऊँची चोटी पर, दुश्मन की गोली झेली, अर्द्ध-बेहोशी की हालत में भारत माँकी जय बोली।। दुर्गम स्थिति और मौसम में, था दुश्मन को ललकारा, हुंकार भरी थी शूरवीर ने, वो भारत माँ का प्यारा। बरबाद किये बंकर दुश्मन के, दुश्मन को मार भगाया, भारत माँ की लाज बचाकर, तिरंगा चोटी पर फहराया। युवा वर्ग के आदर्श बने, हराकर दुश्मन की टोली, सभी ने मिलकर जोर-शोर से, भारत माँ की जय बोली।। व्यर्थ न जाये बलिदान वीरों का, है ऐसी पहचान बनानी, योगेन्द्र यादव ने इतिहास रचा है, लिख दो अमर कहानी।। जय हिन्द ! जय भारत ! ! सेवानिवृत्त मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

मुझे देखते ही माँ ने मेरी झोली दुआओ से भर दी
मैंने तो उन्हें सजदा भी नहीं किया था
या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिताः
नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः

सभी माताओं को मैं मन से सादर अभिनंदन करती हूँ जिन माताओं की कोख से हम इस धरा पर अवतरित हुए उन्हें मैं हृदय से नमन करती हूँ। शब्दों के सागर की गहराइयों से माँ की भावनाओं के कुछ मोती आप के लिए पिरो कर लाई हूँ ध्यान दीजिएगा:-

दुनिया का सब से सरल शब्द है माँ
जिसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है
यह कविता सभी माओं को समर्पित करती हूँ
माँ हमारी जननी है
हमारे जीवन की पहली गुरु है
हमारे जीवन की पहली शिक्षक है
माँ अदभूत है, अविश्वसनीय है, अकल्पनीय है
वो चंद्रमा के समान शीतल है
सूर्या की भांति तेजस्वी है
वायु के समान फुर्ती है
सहनशीलता की मूर्ति है
करुणा से भरपूर है प्यार का सागर है
संस्कारों की संपति है
परम्पराओं को निभाने वाली एक सूत्र है
माँ हमारी उपासना है, अनुशासन है
माँ अंपूर्णा है, आलोकिक है
वो श्रद्धा है, साधना है, समृद्ध है
माँ हमारी रक्त वाहिनियों में बहती संचारिका है
वह जीवन दायिनी है ममता की मूर्ति है
माँ शक्ति है वो तो वरदायिनी है
वास्तव में वो एक समर्पण है, अनमोल रत्न है
वो सर्वत्र है, सर्वज्ञ है
वो हमारे लिए ईश्वर है

वात्सल्य की मूरत है, वृक्षों की छाँव है
हम शब्द है, वो भाषा है
हम कुंठित है तो वो अभिलाषा है
मेरी दृष्टि में यही माँ की परिभाषा है जो बात दवा से बन न सके
वो बात दुआ से होती है
सच्ची गुरु माँ मिल जाए तो बात खुदा से होती है।
आखिरी कुछ पंक्तियाँ सभी बेटियों को समर्पित
कहते हैं कि माँ है तो मायके का आँगन है
माँ है तो हमारा इंतज़ार करती बूढ़ी आंखें है
माँ है तो हमारा इंतज़ार करती वो बूढ़ी आंखें है
माँ है तो रिश्ते के बंधन है माँ है तो मन कि बातें है
माँ है तो विदाई के समय हथेली पर रखे पैसे है
माँ है तो बेटे के लिए मायके कि आँख में नमी है
माँ है तो अधिकार का विश्वास है
माँ है तो सब कुछ पास है
माँ नहीं तो कुछ भी नहीं है
माँ तो एक अनुभूति एक एहसास है

लिपिक, सुरक्षा विभाग
प्रधान कार्यालय उत्तर रेलवे
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली।

भारत माता तुम्हें प्रणाम, अर्पण आपको मंगल गान

विनोद कुमार शर्मा

हर भारतवासी का गान, भारत के हर सैनिक की शान।
भारत के सब प्राणी की जान, भारत माता तुम्हें प्रणाम।।

स्वराज का प्रण लेने वाले, तुमको तन मन देने वाले।
फंदे का हार बनाकर पहना, उन वीरों को मेरा प्रणाम।।

जात पात को छोड़ आज हम, भारत माँ के लिए साथ हम।
भारत को गुरु बनाने को, करें सभी संकल्प आज हम।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई आपस में सब भाई-भाई।
सबकी माता भारत माता, एक ही माँ के पुत्र सब भाई।।

आजाद की मूँछों का ताव, झांसी की रानी की तलवार।
गांधी की लाठी का दाव, भगत सिंह की पगड़ी का मान।।

जब भी दुश्मन चाल चलेगा, पीठ पीछे घात करेगा।
हर भारतवासी का काम, करें दुश्मन का काम तमाम।।

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, ई प्रोजेक्ट विभाग
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

- “मन और ज्ञान की उन्नति करने वाले वचनों का संग्रह ही साहित्य है।”

“पंडित अंबिका प्रसाद बाजपेई”

- “हारने पर रोओ मत, उठो और हार के कारणों को खोजो और जीतने के लिए पुनः आगे बढ़ो।”

“गुरु गोविंद सिंह”

- “राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी।”

“जवाहरलाल नेहरू”

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात:-

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

(क) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

(ख) इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

(ग) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:-

(क) 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

(ख) 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थात:-

(i) केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

(iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

(ग) 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

(घ) 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय अभिप्रेत है;

(ङ) 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

(च) 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

(छ) 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

(ज) 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

(झ) 'हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है ।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

(1) केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

(2) केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

(क) क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ;

(ख) क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।
(3) केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

(4) उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' या 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं।

परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

(क) केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

(ख) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

(ग) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

(घ) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

(ङ) क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

(i) क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

(ii) क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

5. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

- (1) कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।
- (2) जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।
- (3) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

- (1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।
- (2) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।
- (3) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।
- (4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

9. हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

- (क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या
- (ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या
- (ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

- (1) (क) यदि किसी कर्मचारी ने-
 - (i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या
 - (ii) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

- (iii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
- (ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
- (2) यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
- (3) केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
- (4) केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;
- परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।
11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-
- (1) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
- (2) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
- (3) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मर्दें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।
12. अनुपालन का उत्तरदायित्व-
- (1) केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-
- (i) यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और
- (ii) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।
- (2) केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

-“घृणा को घृणा से खत्म नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसे प्रेम से ही खत्म किया जा सकता है जो कि एक प्राकृतिक सत्य है।”

-“जो बीत गया उसमें नहीं उलझना चाहिए और ना ही भविष्य को लेकर ज्यादा चिंतित रहना चाहिए, बल्कि हमें वर्तमान में ही जीना चाहिए।”

“गौतम बुद्ध”

फाइलों पर आदेश हिंदी में (Orders on Files in Hindi)

1.	अनुमोदित	Approved
2.	स्वीकृत	Sanctioned
3.	स्वीकृति की प्रतीक्षा है	Sanction is awaited
4.	अनंतिम रूप से स्वीकृत	Sanctioned provisionally
5.	पावती की प्रतीक्षा है	Acknowledgement is awaited
6.	शीघ्र कार्रवाई अपेक्षित है	Action is required to be taken early
7.	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए	Action may be taken as proposed
8.	कार्रवाई की जा रही है	Action is underway
9.	तदनुसार सूचित करें	Advise accordingly
10.	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है	Agenda is sent herewith
11.	कार्यसूची बाद में भेजी जाएगी	Agenda will follow
12.	सर्व संबंधित नोट करें	All concerned should note
13.	यथा प्रस्तावित अनुमोदित	Approved as proposed
14.	जवाब तलब किया जाए	Call for explanation
15.	मामला समाप्त कर दिया गया है	Case has been closed
16.	जांच की और सही पाया	Checked and found correct
17.	प्रतिलिपि सूचनार्थ प्रेषित	Copy forwarded for information
18.	देरी के लिए खेद है	Delay is regretted
19.	संबंधित कागजों के साथ चर्चा करें	Discuss with relevant papers
20.	विधिवत पालन किया गया	Duly complied
21.	कृपया शीघ्र कार्रवाई करें	Early action please
22.	जांच का आदेश दे दिया गया है	Enquiry has been ordered
23.	बैठक के लिए तारीख निश्चित करें	Fix a date for meeting
24.	सहानुभूतिपूर्वक विचार के लिए	For sympathetic consideration
25.	अग्रेषित और संस्तुत	Forwarded and recommended
26.	इस कार्य को उच्च प्राथमिकता दें	Give top priority to this work
27.	निर्देश जारी किए जाएं	Instructions may be issued
28.	यह बहुत ही आपत्तिजनक है	It is highly objectionable
29.	कृपया सहमति प्रदान करें	Kindly accord concurrence
30.	मामले की जांच कर ली गई है	Matter has been examined
31.	देख लिया	Seen
32.	तदनुसार उत्तर दें	Reply accordingly
33.	कृपया कार्यान्तर स्वीकृति हेतु प्रस्तुत	Submitted for post-facto sanction please
34.	सर्व संबंधित को सूचित करें	Inform to all concerned
35.	उचित माध्यम द्वारा भेजें	Send through proper channel

अंग्रेजी-हिंदी पर्याय

1.	Audit Objections	लेखा परीक्षा आपत्तियाँ
2.	Bilateral Agreement	द्विपक्षीय करार
3.	Indemnity Bond	क्षतिपूर्ति बंधपत्र
4.	Officiating Allowance	स्थानापन्न भत्ता
5.	Supplementary Budget	अनुपूरक बजट
6.	Authenticity	प्रामाणिकता
7.	Encroachment	अवैध कब्जा/अतिक्रमण
8.	Modus operandi	कार्य प्रणाली
9.	Points & Crossing	कांटे और क्रॉसिंग
10.	Schedule of rates	दर अनुसूची
11.	Works programme	निर्माण कार्यक्रम
12.	Accident Relief Train	दुर्घटना सहायता गाड़ी/ दुर्घटना राहत गाड़ी
13.	Appellate authority	अपील प्राधिकारी
14.	Channel of promotion	पदोन्नति की सरणि
15.	Charge sheet	आरोप पत्र
16.	Competitive exam	प्रतियोगी परीक्षा
17.	Complimentary pass	मानार्थ पास
18.	Criminal offence	दंडनीय अपराध
19.	Welcome address	स्वागत भाषण
20.	Working knowledge	कार्यसाधक ज्ञान
21.	Decentralisation	विकेन्द्रीकरण
22.	Departmental promotion committee	विभागीय पदोन्नति समिति
23.	Discrepancy	विसंगति
24.	Exparte decision	इक तरफा निर्णय, एक पक्षीय निर्णय
25.	Judicial proceedings	क्षेत्राधिकार/अधिकार क्षेत्र
26.	Leave on average pay	औसत वेतन छुट्टी
27.	Maintenance of records	अभिलेखों का अनुरक्षण
28.	Reviewing authority	पुनरीक्षण प्राधिकारी
29.	Seniority-cum-suitability	वरिष्ठता व उपयुक्तता
30.	Laboratory	प्रयोगशाला
31.	No dues certificate	बेबाकी प्रमाणपत्र
32.	Open market	खुला बाजार
33.	Interlocking apparatus	अंतर्पार्श्व-उपकरण
34.	Income per capita	प्रति व्यक्ति आय
35.	Index number	सूचकांक

अंग्रेजी-हिंदी पर्याय

36.	Clock room	अमानती सामान घर
37.	Honorarium	मानदेय
38.	Caution order	सावधानता आदेश
39.	Lost property office	खोया-पाया सामान घर
40.	Memorandum	ज्ञापन
41.	Overtime allowance	समयोपरि भत्ता
42.	Registration fee	पंजीयन शुल्क
43.	Rejoinder	प्रत्युत्तर
44.	Anti corruption department	भ्रष्टाचार निरोधी विभाग
45.	Departmental enquiry	विभागीय जांच
46.	Discretion	विवेकाधिकार
47.	Facts & evidence	तथ्य और साक्ष्य
48.	Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
49.	Prevention of corruption	भ्रष्टाचार की रोकथाम/भ्रष्टाचार निवारण
50.	Prima facie	प्रथम दृष्ट्या
51.	Authority to proceed	प्रस्थान प्राधिकार
52.	Breach of block rules	ब्लॉक नियमों का उल्लंघन
53.	Permissible speed	अनुमत/अनुमेय गति
54.	Extraordinary	असाधारण
55.	Admitted Debt	स्वीकृत ऋण
56.	Anticipated Expenditure	प्रत्याशित व्यय
57.	Budget Estimate	बजट प्राक्कलन/अनुमान
58.	Debenture	ऋण पत्र
59.	Earnest Money	बयाने की रकम/बयाना, अग्रिम धन
60.	Ex-gratia payment	अनुग्रही भुगतान/अनुग्रही अदायगी
61.	Final write off	अंतिम रूप से बट्टे में डालना
62.	Irrecoverable	निर्गम मूल्य
63.	Maintenance Reserve Fund	अनुरक्षण आरक्षित निधि
64.	Receipts and Disbursement	प्राप्ति तथा संवितरण
65.	Paucity of funds	धनाभाव/धन की कमी
66.	Permanent way diagram	रेलपथ रेखा/चित्र
67.	Re-alignment	पुनः संरेखण/पुनः सिधाई
68.	Screening of ballast section	गिट्टी की छनाई
69.	Asst. Traction Power Controller	सहायक कर्षण शक्ति नियंत्रक
70.	Balanced load	संतुलित भार/संतुलित लोड

अंग्रेजी-हिंदी पर्याय

71.	Habitual defaulter	आदतन चूककर्ता
72.	History of service	सेवावृत्त
73.	Maternity leave	प्रसूति छुट्टी
74.	Privilege ticket order	सुविधा टिकट आदेश
75.	Reviewing authority	पुनरीक्षण प्राधिकारी
76.	Calls for tenders	निविदा आमंत्रण
77.	Controller of Stores	भंडार नियंत्रक
78.	Manufacturer	विनिर्माता
79.	Scrap material	रद्दी सामग्री
80.	Supplying firm	पूर्तिकार फर्म
81..	Level crossing	समपार
82.	Average overall detentions	औसत कुल विलंब/औसत कुल रुकाई
83.	Passenger proportion	यात्री अनुपात
84.	Dead stock	निष्क्रिय स्टॉक
85.	Goods Shed	माल गोदाम
86.	Home delivery service	घर सुपुर्दगी सेवा/घर पहुंचाई सेवा
87.	Loading of goods	माल का लदान, माल लदाई
88.	Local sales tax	स्थानीय बिक्री कर
89.	Lump sum rate	एक मुश्त दर
90.	Pantry car	पैंट्री कार/रसोई यान
91.	Anonymous complaint	अनाम शिकायत/अनाम परिवाद
92.	Censure	परिनिन्दा
93.	Consultation	परामर्श
94.	Prevention of corruption	भ्रष्टाचार की रोकथाम/भ्रष्टाचार निवारण
95.	Prosecution	अभियोजन
96.	Breach of block rules	ब्लॉक नियमों का उल्लंघन
97.	Calling on Signal	बुलावा सिगनल
98.	Permission to approach	आगमन अनुमति
99.	Facility	सुविधा
100.	Correspondent	संवाददाता
101.	Fundamental rules	मूल नियम
102.	Zonal Railway Users Consultative Committee	क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति

विदेशी भाषाओं के शब्दों का हिंदी लिप्यंतरण

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी लिप्यंतरण	क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी लिप्यंतरण
1.	Agency	एजेंसी	36.	Debit	डेबिट
2.	Agmark	एगमार्क	37.	Depot	डिपो
3.	Alarm	अलार्म	38.	Diploma	डिप्लोमा
4.	Bank	बैंक	39.	Doctor	डॉक्टर
5.	Banker	बैंकर	40.	Drawing	ड्राईंग
6.	Banking Company	बैंकिंग कंपनी	41.	Duty	ड्यूटी
7.	Batch	बैच	42.	Duty Roster	ड्यूटी रोस्टर
8.	Bench	बेंच	43.	Express	एक्सप्रेस
9.	Bill Counter	बिल काउंटर	44.	File	फाइल
10.	Bill	बिल	45.	File board	फाइल बोर्ड
11.	Bond	बाण्ड	46.	Firm	फर्म
12.	Brigade	ब्रिगेड	47.	Flat	फ्लैट
13.	Budget	बजट	48.	Folder	फोल्डर
14.	Brake	ब्रेक	49.	Folio	फोलियो
15.	Bulletin	बुलेटिन	50.	Format	फार्मेट
16.	Bumper	बम्पर	51.	Form	फार्म
17.	Booking	बुकिंग	52.	Gate pass	गेट पास
18.	Bureau	ब्यूरो	53.	Gallery	गैलरी
19.	Calender	कैलेंडर	54.	Grade	ग्रेड
20.	Call book	काल बुक	55.	Guarantee	गारंटी
21.	Camp	कैंप	56.	Guard	गार्ड
22.	Cash memo	कैश मेमो	57.	Guard file	गार्ड फाइल
23.	Chamber	चैम्बर	58.	Hall	हॉल
24.	Charge men	चार्जमेन	59.	Interview	इंटरव्यू
25.	Circle	सर्कल/सर्किल	60.	Label	लेबल
26.	Cleaner	क्लीनर	61.	Letter box	लेटर बॉक्स
27.	Collector	कलेक्टर	62.	Licence	लाइसेंस
28.	Column	कॉलम	63.	Licence fee	लाइसेंस फीस
29.	Computer	कंप्यूटर	64.	Lobby	लाबी
30.	College	कॉलेज	65.	Log book	लाग बुक
31.	Copy right	कॉपीराइट	66.	Menu	मेनू/मेन्यू
32.	Counter	काउंटर	67.	Monogram	मोनोग्राम
33.	Counter clerk	काउंटर क्लर्क	68.	Motor	मोटर
34.	Courier	कूरियर	69.	Notary public	नोटरी पब्लिक
35.	Coupon	कूपन	70.	Notice	नोटिस

विदेशी भाषाओं के शब्दों का हिंदी लिप्यंतरण

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी लिप्यंतरण	क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी लिप्यंतरण
71.	Notice board	नोटिस बोर्ड	91.	Shareholder	शेयर होल्डर
72.	Note pad	नोट पैड	92.	Signal	सिगनल
73.	Pamphlet	पैम्फलेट	93.	Staff car	स्टाफ कार
74.	Pattern	पैटर्न	94.	Staff quarter	स्टाफ क्वार्टर
75.	Pension	पेंशन	95.	Stencil	स्टेंसिल
76.	Pension Card	पेंशन कार्ड	96.	Stock	स्टॉक
77.	Pensioner	पेंशनर	97.	Stockist	स्टॉकिस्ट
78.	Photostat	फोटोस्टेट	98.	Stretcher	स्ट्रेचर
79.	Photostat machine	फोटोस्टेट मशीन	99.	Studio	स्टूडियो
80.	Premium	प्रीमियम	100.	Terminus	टर्मिनस
81.	Press	प्रेस	101.	Ticket	टिकट
82.	Public school	पब्लिक स्कूल	102.	Tier	टीयर
83.	Quota	कोटा	103.	Trademark	ट्रेडमार्क
84.	Quotation	कोटेशन	104.	Trophy	ट्राफी
85.	Record	रिकार्ड	105.	Typewriter	टाइपराइटर
86.	Report	रिपोर्ट	106.	Warrant	वारंट
87.	Register	रजिस्टर	107.	Warranty	वारंटी
88.	Registry	रजिस्ट्री	108.	Xerox copy	ज़िरोक्स कॉपी
89.	Roster	रोस्टर	109.	Zonal	ज़ोनल
90.	Royalty	रायल्टी	110.	Zone	ज़ोन

-“सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है”
" डॉ अमरनाथ झा"

-“हिंदी की समृद्धि और विकास के लिए जो कुछ भी संभव है, किया जाना चाहिए।”
"जगजीवन राम"

-“राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।”
"लाला लाजपत राय"

उत्तर रेलवे पर राजभाषा पखवाड़ा, 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियां



दिनांक 4.9.2023 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता



दिनांक 4.9.2023 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता



दिनांक 4.9.2023 को आयोजित हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता



दिनांक 4.9.2023 को आयोजित हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता



दिनांक 5.9.2023 को आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता



दिनांक 5.9.2023 को आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता



दिनांक 6.9.2023 को आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



दिनांक 6.9.2023 को आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

उत्तर रेलवे, राजभाषा पखवाड़ा, 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं अन्य कार्यक्रमों की झलकियां



12.9.23 को आयोजित अधिकारियों के लिए हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



12.9.23 को आयोजित अधिकारियों के लिए हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



11.09.2023 को आयोजित कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता



11.09.23 को आयोजित कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता



13.09.23 को रामधारी सिंह दिनकर जयंती का आयोजन



13.09.23 को रामधारी सिंह दिनकर जयंती का आयोजन

उत्तर रेलवे राजभाषा पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 18.9.2023 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली में आयोजित उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं पुरस्कार वितरण की झलकियां



दिनांक 18.9.2023 को आयोजित उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक महोदय श्री शोभन चौधरी



दिनांक 18.9.2023 को आयोजित उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपस्थित अधिकारीगण



दिनांक 18.9.2023 को आयोजित उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपस्थित अधिकारीगण



दिनांक 18.9.2023 को उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में महाप्रबंधक महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण



दिनांक 18.9.2023 को उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में पुरस्कार वितरण



दिनांक 18.9.2023 को उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में पुरस्कार वितरण



दिनांक 18.9.2023 को उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में पुरस्कार वितरण



दिनांक 18.9.2023 को उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में पुरस्कार वितरण

उत्तर रेलवे राजभाषा पखवाड़ा - 2023 के समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 18.9.2023 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस में आयोजित हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की झलकियां



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 12.5.2023 को अमृतसर में मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, फिरोज़पुर तथा स्टेशन अधीक्षक कार्यालय, अमृतसर की निरीक्षण बैठकों की झलकियां



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 03 अक्तूबर, 2023 से 06 अक्तूबर, 2023 तक धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में उत्तर रेलवे के विभिन्न कार्यालयों की निरीक्षण बैठकों की झलकियां





श्री मोहित सिन्हा, महानिदेशक, मानवसंसाधन, रेलवे बोर्ड से मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राकेश कुमार रोशन, मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक, वाराणसी, लखनऊ मंडल। साथ में उपस्थित अन्य अधिकारी गण



दिनांक 10.1.2024 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली में कवि सम्मेलन का आयोजन



दिनांक 10.1.2024 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली में कवि सम्मेलन का आयोजन

2023

